Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 37

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

14 सितम्बर 2017 ई. 22 ज़िलहज्जा 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

डोई नामक एक व्यक्ति अमरीका का रहने वाला था। उसने पैग़म्बर (अवतार) होने का दावा किया था तथा इस्लाम का कट्टर विरोधी था। उसका विचार था कि मैं इस्लाम का समूल विनाश करूंगा। हज़रत ईसा को ख़ुदा मानता था। मैंने उसकी ओर लिखा था कि मेरे साथ मुबाहला करे। इसके साथ यह भी लिखा था कि यदि वह मुबाहला नहीं करेगा तब भी ख़ुदा उसको तबाह कर देगा।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

28. अट्ठाईसवां निशान - आत्माराम की सन्तान की मृत्यु के बारे में भविष्यवाणी। अत: बीस दिन में उसके दो पुत्र मर गए। इस भविष्यवाणी के साक्षी वे जमाअत के लोग हैं जो गुरदासपुर में मेरे साथ मुकद्दमे में उपस्थित थे।

29. उन्तीसवां निशान - लाला चन्दूलाल मजिस्ट्रेट अतिरिक्त सहायक मजिस्ट्रेट गुरदासपुर की अवनति के संबंध में भविष्यवाणी। अत: वह गुरदासपुर से स्थानांतरित होकर मुलतान मुन्सिफ़ा पर चला गया।

30. तीसवां निशान - डोई नामक एक व्यक्ति अमरीका का रहने वाला था। उसने पैग़म्बर (अवतार) होने का दावा किया था तथा इस्लाम का कट्टर विरोधी था। उसका विचार था कि मैं इस्लाम का समूल विनाश करूंगा। हज़रत ईसा को ख़ुदा मानता था। मैंने उसकी ओर लिखा था कि मेरे साथ मुबाहला करे। इसके साथ यह भी लिखा था कि यदि वह मुबाहला नहीं करेगा तब भी ख़ुदा उसको तबाह कर देगा। अत: यह भविष्यवाणी अमरीका के कई अखबारों में प्रकाशित की गई और अपनी अंग्रेज़ी पत्रिका में भी प्रकाशित की गई। अन्तत: इस भविष्यवाणी का परिणाम यह हुआ कि कई लाख रुपए की सम्पत्ति से उसे हाथ धोना पड़ा और बड़े अपमान का सामना करना पड़ा तथा स्वयं लक़्वा (पक्षाघातों में ग्रस्त हो गया, ऐसा कि अब वह एक पग भी स्वयं नहीं चल सकता। प्रत्येक स्थान पर उठा कर ले जाते हैं। अमरीका के डाक्टरों ने परामर्श दिया है कि अब यह उपचार योग्य नहीं, कदाचित कुछ माह तक मर जाएगा।

31. इकत्तीसवां निशान - मेरे बरी होने के बारे में डाक्टर मार्टिन क्लार्क के मुक़द्दमे में भविष्यवाणी थी जो उसने मुझ पर ख़ून करने का मुकद्दमा किया था। अत: इस भविष्यवाणी के अनुसार मैं बरी हो गया।

32. बत्तीसवां निशान - टैक्स के मुकद्दमे के बारे में भविष्यवाणी है जो कुछ दुष्ट लोगों ने अंग्रेज़ी सरकार में मेरे बारे में यह सूचना दी थी कि इनकी हज़ारों रुपए की आय है टैक्स लगाना चाहिए। ख़ुदा तआला ने मुझ पर प्रकट किया कि इसमें वे लोग विफल रहेंगे। अत: ऐसा ही प्रकट हुआ।

33. तेंतीसवां निशान - मिस्टर डोई डिप्टी कमिश्नर गुरदासपुर के यहां मेरे बारे में दण्ड दिलाने की नीयत से फौजदारी में पुलिस ने एक मुक़द्दमा बनाया था। उसके संबंध में ख़ुदा तआला ने मुझे बताया कि ऐसा प्रयास करने वाले असफल रहेंगे। अत: ऐसा ही हुआ। इस विषय में ख़ुदा तआला ने मुझे कहा -

انا تجالدنا فانقطع العدو و اسبابهيعن

अर्थात् हमने तलवार के साथ युद्ध किया। अत: परिणाम यह हुआ कि शत्रु तबाह हो गया और उस का सामान भी तबाह हुआ। यहां शत्रु से अभिप्राय एक डिप्टी इन्सपैक्टर है जिसने अकारण शत्रुता से मुकद्दमा बनाया था। अन्तत: प्लेग से मरे।

34. चौतीसवां निशान - यह है कि मेरा एक लड़का मृत्यु को प्राप्त हो गया था तथा विरोधियों ने जैसा कि उनका स्वभाव है। उस लड़के की मृत्यु पर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की थी तब ख़ुदा ने मुझे शुभ सन्देह देकर कहा कि इसके बदले में शीघ्र एक लड़का पैदा होगा जिसका नाम महमूद होगा तथा मुझे उस का नाम एक दीवार पर लिखा हुआ दिखाया गया। तब मैंने एक हरे रंग के विज्ञापन में हज़ारों समर्थकों और विरोधियों के लिए भविष्यवाणी प्रकाशित की तथा अभी सत्तर दिन पहले लड़के की मृत्यु पर नहीं गुज़रे थे कि यह लड़का पैदा हो गया और उसका नाम महमूद अहमद रखा गया।

35. पैंतीसवां निशान - यह है कि पहला लड़का महमूद अहमद जन्म लेने के पश्चात् मेरे घर में एक और लड़का पैदा होने की मुझे शुभ सूचना दी तथा उसका विज्ञापन भी लोगों में प्रकाशित किया गया। अत: दूसरा लड़का पैदा हुआ और उसका नाम बशीर अहमद रखा गया।

शेष पृष्ठ 12 पर

123 वां
जलसा सालाना क़ादियान
दिनांक 29, 30, 31 दिसम्बर 2017 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 123 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 29, 30 और 31 दिसम्बर 2017 ई.(जुम्अ:, हफता व इतवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद (नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

अल्लाह तआला की राह में खर्च करना

(पवित्र उपदेश और ईमान वर्धक घटनाएं) (भाग-2)

हमारे रहमान व रहीम का हम पर कितना एहसान है कि उसी ने हमें बनाया, उसी ने जीवन दिया, उसी ने माल कमाने की शक्ति और ताकत दी और जब उसी के फज़ल से और उसी की इनायत से अर्जित धन का एक भाग उसी के लिए कुरबान किया जाता है तो थोड़े को भी बहुत देने वाला अल्लाह तआला इतना ख़ुश होता है कि जन्नत की बिशारत प्रदान फरमाता है। नि:सन्देह एक मोमिन बन्दा के लिए इससे बढ़कर और कौन की बरकत है जो फौज़ुन अज़ीम कहला सकती है?

राहे ख़ुदा में खर्च करने और इस नेकी के रास्ते में सुस्ती और काहली से बचने की भरपूर ताकीद करते हुए अल्लाह तआला ने फरमाया है:

يَـآ أَيُّهَـا الَّذِيْـنَ اٰمَنُـوْا أَنْفِقُـوْا مِمَّـا رَزَقْنَاكُـمْ مِّـنْ قَبْـلِ أَنْ يَّـأْتِيَ يَـوْمٌ لَّا بَيْـعٌ فِيْـهِ وَلَا خُـلَّةٌ وَّلَا شَـفَاعَةٌ ط وَالْكَافِـرُوْنَ هُـمُ الظَّالِمُـوْن

(सूर: अल्बकर: आयत 256) "हे वह लोगो जो ईमान लाए हो! खर्च करो उसमें से जो हमने तुम्हें दिया है उस से पहले कि वह दिन आए जिसमें न कोई व्यापार होगा और न कोई दोस्ती और न कोई शिफारिश और काफिर ही हैं जो ज़ुल्म करने वाले हैं।

इस जगह यह बात याद रखने योग्य है कि ख़ुदा की राह में खर्च न करने वालों को अल्लाह तआला ने ज़ालिम करार दिया है और स्पष्ट बात है कि भविष्य में मिलने वाली महान सफलता की तुलना में दुनिया की अस्थायी ख़ुशी और राहत को प्राथमिकता करने वाला बहुत बड़ा तानाशाह नहीं तो और क्या है?

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसें:

कुछ कुरआन की आयतों से लाभ उठोने के बाद आइए अब हम उन उपदेशों से बरकतें और मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं जो हमारे प्यारे आक़ा हज़रत ख़ातमुल अंबिया मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वस्सलाम के वर्णन किए हुए हैं। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऐसे अनपढ़ नबी हैं कि आप ने किसी इंसान से ज्ञान नहीं सीखा, अलीम और ख़बीर अल्लाह तआला ख़ुद आपका शिक्षक था। वास्तविक उस्ताद ने आप को वह ज्ञान और मआरिफ़ सिखाए कि आप सारी दुनिया को हिदायत देने वाले और मार्ग दर्शक बन गए। वित्तीय कुरबानी के विषय पर भी आप ने अपनी उम्मत को बेनजीर मार्गदर्शन किया। कुछ उपदेश नमूना के रूप में प्रस्तुत करता हूँ । एक एक उपदेश ध्यान से पढ़ने और याद रखने लायक है।

* एक हदीस कुदसी में वर्णन है कि " हे आदम के पुत्र ! तू दिल खोलकर राहे ख़ुदा में खर्च कर, अल्लाह तआला भी तुझ पर खर्च करेगा। "

(मुस्लिम किताबुज्ज़कात हदीस नंबर 2308)

* फरमाया "रशक योग्य वह व्यक्ति जिसे अल्लाह तआला ने माल प्रदान किया और फिर उस माल को उसके यथा स्थान खर्च करने की भी अत्याधिक तौफ़ीक़ और हिम्मत दी" (बुख़ारी किताबुल ज़कात)

* फरमाया "दौलत वाला वह नहीं जिसके पास अधिक माल हो बल्कि वास्तविक धनवान तो वह है जिस का समृद्ध हो अर्थात राहे ख़ुदा में दिल खोलकर खर्च करता हो। " (तिर्मिज़ी अबवाबुज़ुहद)

*फरमाया " जो व्यक्ति अल्लाह तआला के मार्ग में कुछ खर्च करता है उसे बदला में सात सौ गुना अधिक इनाम मिलता है " (तिर्मिज़ी अबवाबुज़ुहद)

* फरमाया " नेकी का सभी दरवाज़ों में से सब से अच्छा दरवाज़ा दान करना है।"

(अलमुजमुल कबीर लेतिबरानी हदीस 12663, कनज़ुल उम्माल हदीस 16015)

* फरमाया " हर रोज़ सुबह दो फरिशते नाज़िल होते हैं उनमें से एक कहता है हे अल्लाह ! राहे ख़ुदा में खर्च करने वाले को बेहतर बदला दे और उसके नक्शे कदम पर चलने वाले और पैदा कर और दूसरा कहता है कि हे अल्लाह! माल रोकने वाले के लिए मौत और बर्बादी मुक़द्दर कर। " (बुखारी किताबुल ज़कात)

(जो लोग नेक औलाद और सालेह औलाद से वंचित हैं उनके लिए इस हदीस में एक महान याद दिलाने वाली बात है "हे आज़माने वाले यह नुस्खा भी आजमा ")

* फरमाया " तुम्हारा वास्तविक माल वही है जो ख़ुदा की राह में खर्च करके आगे भिजवा चुके हो। जो पीछे रह गया है वह तो वारिसों का माल है। "

(मुस्लिम किताबुल ज़कात हदीस नंबर 2383)

* फरमाया " मुसलमान आदमी का सदका करना उम्र बढ़ाता है और बुरी मौत से बचाता है। "

(कंज़ुल उम्माल हदीस 16062)

* फ़रमाया हर उम्मत की एक परीक्षा है। मेरी उम्मत की परीक्षा माल में है। "

(तिर्मिज़ी किताबुल ज़ुहद)

* फरमाया " अल्लाह तआला के रास्ते में गिन गिन कर खर्च न करो। अन्यथा अल्लाह तआला भी तुम्हें गिन गिन कर ही दिया करेगा। अपने रुपयों की थैली का मुंह कंजूसी के कारण बंद करके न बैठ जाना अन्यथा फिर उसका मुंह बंद ही रखा जाएगा। जितनी शक्ति है दिल खोलकर खर्च करो "

(बुख़ारी किताबुल ज़कात)

कुरआन और हदीसों से मिलने वाला यह मार्गदर्शन इस तथ्य को खूब प्रकट करता है कि धर्म की आवश्यकताओं के लिए वित्तीय बलिदान अल्लाह तआला के निकट और अल्लाह तआला की प्रसन्नता पाने का एक निश्चित और विश्वसनीय माध्यम है। इन वित्तीय बलिदान के परिणाम में एक तरफ तो कुरबानी करने वालों को अल्लाह तआला का प्यार नसीब होता है तो दूसरी ओर रहीम व करीम अल्लाह तआला इसी दुनिया में ऐसे निष्ठावान बन्दे को नवाज़ना शुरू कर देता है। अपनी तरफ से उसकी झोलियाँ फज़लों से भर देता है। बेहिसाब प्रदान करता है। उस की मुसीबतों और परेशानियों को दूर करता है। उसकी जीवन में बरकत देता है और यही नहीं बल्कि उसे इसी जीवन में जन्नत सी स्थिति भी प्रदान करता है और ख़ुद उसकी ज़रूरतों का पूरी करने वाला हो जाता है। राहे ख़ुदा में वित्तीय बलिदान करने वालों के लिए आख़िरत में जन्नत का अंतिम वादा सच्चे वादों वाले ख़ुदा ने दे रखा है जिसमें किसी प्रकार की देरी की संभावना संभव नहीं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उपदेश:

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी लेखनी और मल्फूज़ात में अल्लाह तआला की राह में खर्च करने के विषय में बहुत विस्तार से प्रकाश डाला है और बार बार अपने मानने वालों को इसके महत्व, उपयोगिता और आवश्यकता से सूचित फरमाते हुए इस मार्ग में आगे बढ़ने की हिदायत फ़रमाई है। इस व्यापक संग्रहण मैं से कुछ नमूने आपकी सेवा में पेश करता हूँ।

ज्ञान अनुभूति और आध्यात्मिक प्रभाव के आधार पर इन ज़ोरदार उपदेशों का महान स्थान है। बस ऐसे दिलों की ज़रूरत है जो उन शब्दों को अपने दिल में जगह दें। आप फरमाते हैं:

"सच्चा इस्लाम यही है कि अल्लाह तआला की राह में अपनी सारी शक्तियों और ताकतों मरने तक समर्पित कर दे। ताकि वे पवित्र जीवन का वारिस हो।"

(अल्हकम जिल्द 4 नंबर 29 दिनांक 16 अगस्त 1900 पृष्ठ 3, मल्फूज़ात जिल्द 2 पेज 90)

"मूल राज़िक(रिज़्क देना वाला) अल्लाह तआला है। वह व्यक्ति जो उस पर भरोसा करता है कभी रिज़्क से वंचित नहीं रह सकता। वह हर तरह से और हर जगह अपने पर भरोसा करने वाले व्यक्ति के लिए रिज़्क पहुंचाता है। अल्लाह तआला फरमाता है कि जो मुझ पर विश्वास करे और भरोसा करे उसके लिए आसमान से बरसाता और कदमों में से निकालता हूँ। अत: चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति अल्लाह तआला पर भरोसा करे। " (मल्फूज़ात जिल्द 9 पेज 360)

" जो व्यक्ति ... आवश्यक कामों में धन खर्च करेगा उम्मीद नहीं रखता कि माल के खर्च से उसके माल में कुछ कमी आ जाएगी। बल्कि उसे माल में बरकत होगी। अत: चाहिए कि अल्लाह तआला पर भरोसा करके पूरे आचरण और जोश और हिम्मत से काम लें कि यही समय ख़िदमत करने का है। फिर इस के वह समय आता है कि एक सोने का पहाड़ भी रास्ते में खर्च करो तो इस समय के पैसे के बराबर नहीं होगा। ..और अल्लाह तआला ने लगातार प्रकट कर दिया है कि वास्तव में और निश्चित रूप से वही व्यक्ति इस जमाअत में प्रवेश माना जाएगा कि अपने प्रिय माल से इस रास्ते में खर्च करेगा। यह दिखाता है कि आप दो चीज़ से प्यार नहीं कर सकते हैं और आप के लिए संभव नहीं है कि माल से भी प्रेम करो और अल्लाह तआला से भी। केवल एक प्यार कर सकते हैं। अत: भाग्यशाली वह व्यक्ति है कि अल्लाह तआला से प्यार करे और अगर कोई तुम से अल्लाह तआला से प्यार करके उस के रास्ते में धन खर्च करेगा तो मैं विश्वास रखता हूँ कि उसके माल में भी दूसरों की तुलना में अधिक बरकत दी जाएगी। क्योंकि माल अपने आप

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

प्रत्येक अहमदी जो अपने आप को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में शामिल करता है वह आध्यात्मिक, नैतिक ज्ञान वर्धक और आस्था की बेहतरी के लिए एक वादा करता है और इस दौर में जब अल्लाह ने हमें एम.टी ए की नेअमत से सम्मानित किया है और जमाअत के कार्यक्रम जलसे, खुत्बे और सबसे बढ़कर बैअत के बारे में आलमी बैअत में तो एम. टी. ए और इंटरनेट के माध्यम से लाखों अहमदी शामिल होते हैं इसलिए हर अहमदी जो जन्मजात अहमदी या ख़ुद बैअत कर के अहमदियत में शामिल हुआ है यह नहीं कह सकता कि हमें तो बैअत के वादा का पता नहीं है। इसलिए यदि आवश्यक हो, तो हम बैअत करने के बाद इस के विवरण जानने की कोशिश करें और बैअत के वादा को सामने रखें।

यदि हम समीक्षा करें तो हमारे अन्दर भी एक चिन्ता योग्य संख्या ऐसे लोगों की है जो बावजूद बैअत के अहद के इन बातों पर अनुकरण नहीं करते।

अहमदी वकीलों को भी चाहिए और दोनों पक्षों को भी कि वे अपने बैअत के अहद को और अल्लाह तआला के ख़ौफ को अपने लाभों पर प्राथमकिता दें।

एक मोमिन का काम है कि झगड़ों को लम्बा करने के स्थान पर अपनी ज़िदों पर अड़ने के स्थान पर अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए अपने अन्दर नर्मी पैदा कर के जमाअत के निज़ाम या कज़ा में अपने मामले लाएं और कोशिश यह हो कि हम आपस में भाई भाई हैं हम ने इन ग़लत फहमियों और नाजायज़ शिकायतों को दूर कर के आपस में प्यार और मुहब्बत की ज़िन्दगी गुज़ारनी है।

अगर झगड़ों को हम ने उत्तम रूप से निपटाना है तो ज़िदों को छोड़ने की ज़रूरत है बल्कि कई बार झगड़ों को समाप्त करने के लिए अगर हक बनता भी है तो उस हक के लेने में दूसरे पक्ष को आसानी देनी की ज़रूरत होती है और कई बार कुछ सीमा तक कुछ हद तक छोड़ना भी पड़ जाता है।

अल्लाह के रहम और क्षमा को ज़ज़्ब करने के लिए हमें दुनिया में अपने मामलों में एक दूसरे से नर्मी और रहम का सुलूक करना चाहिए न कि सिर्फ सख़्ती और पकड़ और अपने हक की चिन्ता हो।

आपसी लेन देन और कर्ज़ों के लेने, और अदा करने के मामलों में सच्चाई और दयानत से मामले तय करने और कज़ा के फैसलों को स्वीकार करने और अपनी ज़िद्दों को छोड़ने के बारे में इस्लामी शिक्षा और जमाअत के लोगों को प्रमुख उपदेश।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 11 अगस्त 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

प्रत्येक अहमदी जो अपने आप को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में शामिल करता है वह आध्यात्मिक, नैतिक ज्ञान वर्धक और आस्था की बेहतरी के लिए एक वादा करता है और इस दौर में जब अल्लाह ने हमें एम.टी ए की नेअमत से सम्मानित किया है और जमाअत के कार्यक्रम जलसे, खुत्बे और सबसे बढ़कर बैअत के बारे में आलमी बैअत में तो एम. टी. ए और इंटरनेट के माध्यम से लाखों अहमदी शामिल होते हैं इसलिए हर अहमदी जो जन्मजात अहमदी या ख़ुद बैअत कर के अहमदियत में शामिल हुआ है यह नहीं कह सकता कि हमें तो बैअत के वादा का पता नहीं है।

इसलिए यदि आवश्यक हो, तो हम बैअत करने के बाद इस के विवरण जानने की कोशिश करें और बैअत के वादा को सामने रखें। यदि हम बैअत की शर्तों में वर्णित नैतिक सुधार की शर्तों को सामने रखें , तो हमारे नैतिक मानकों, सामाजिक संबंध, व्यापारिक मामले और दैनिक लेनदेन, घरेलू और नागरिक मामले, इन सब में एक असाधारण सुधार पैदा हो सकता है लेकिन हम में से बहुत ऐसे हैं जो इन मानकों से दूर हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हम में देखना चाहते थे। इस सन्दर्भ में अपनी शर्तों में जिन बातों की तरफ आप ने ध्यान दिलाया है उन में से कुछ एक ये हैं उदाहरण के लिए, झूठ मत बोलो, अन्याय न करें, ख़यानत से बचना। नफ्सानी जोशों से अभिभूत न होना। सारी दुनिया को आम तौर पर और मुसलमानों को विशेष रूप से अपने नफ्सानी जोशों के कारण से हाथ या जीभ से कष्ट नहीं देना। अहंकार नहीं करना। विनम्रता धारण करनी है। हमेशा अच्छे चरित्र का प्रदर्शन करते हुए ज़िन्दगी व्यतीत करनी है। आमतौर पर हमें मानव जाति के लाभ का प्रयास करना है।

(उद्धरित इज़ाला औहाम, रूहानी ख़ज़ायन, खंड 3, पृष्ठ 563 से 564)

हम अगर इन बातों पर ध्यान दें, जैसा कि मैंने कहा हम न केवल उच्चतम

गुणवत्ता वाली नैतिकता प्राप्त कर सकते हैं, बल्कि हम उनकी ऊंचाइयों को छू सकते हैं। अपनी नैतिकता की गुणवत्ता बढ़ा सकते हैं, अपने अन्दर उच्च स्तर पैदा कर सकते हैं। लेकिन अगर हम समीक्षा करें तो हमारे बीच भी एक चिन्ता योग्य संख्या ऐस लोगों की है, जो बैअत के अहद के इन बातों का पालन नहीं करते। जब तक हम व्यक्तिगत रूप से ऐसे हालात से नहीं गुज़रते हैं जहां हमें अपने अधिकारों को त्याग करके या अपने आप को कष्ट में डाल कर अपनी श्रेष्ठ आचरण को अपनाना हो, हम बड़े ज़ोर शोर से कहते हैं कि नि:सन्देह इन उच्च आचरणों का प्रदर्शन हमें करना चाहिए और जो ये नहीं करता वह अत्याचार करता है लेकिन जब हम सीधे प्रभावित हो रहे होते हैं, तो हम में से अधिकतर इन नैतिकताओं को भूल जाते हैं। अगर हमें ज़रूरत पड़ती है तो इन बातों को इस तरह से तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत करते हैं कि इसमें सच्चाई नहीं रहती बल्कि वो झूठ के निकट पहुंच जाता है। अपने अधिकार को प्राप्त करने के लिए कभी कभी ज़ुल्म भी करते हैं कुछ लोग कभी-कभी ख़यानत(धोखाधड़ी) करते हैं, और झूठी गवाहियां अपने आप को ख़यानत से बचाने के लिए पेश करते हैं। यदि हाथ से नहीं, तो ज़बान से अक्सर अपने लक्ष्यों को पूरा करने का दूसरों को कष्ट दे देते हैं विनम्रता दिखाने के बजाय,अंहकार से अभिभूत हो जाते हैं और कभी-कभी अंहकार का कम या अधिक अभिव्यक्ति भी हो जाती है मैंने देखा है कि क़ज़ा के कुछ मामले जब मेरे सामने आते हैं तो झूठ और सच को साबित करने के बजाय, अधिकार लेने के बजाय, हठधर्मी और ज़िद की ऐसा व्यक्त होता है कि आश्चर्य होता है। कारोबारों में सच्चाई पर आधार के स्थान पर व्यक्तिगत लाभ प्राप्त करने में अधिक रुचि रखते हैं। इस पर अधिक ये है कि दोनों पक्षों ने जो वकील किए होते हैं वे अपने व्यावसायिक कौशल दिखाने में के लिए और अपनी श्रेष्ठता साबित करने की कोशिश में ऐसी ग़लत बातें करते हैं जो झूठ होता है। चाहे वह लेनदेन के मामले हों या पति पत्नी के झगड़े या किसी भी तरह के सौदे हो, वकीलों की तरफ से लम्बे कर दिए जाते हैं। इसलिए अहमदी वकीलों को भी और पक्षों को भी कि वे अपने बैअत के अहद और अल्लाह तआला के भय को अपने स्वयं के हितों पर प्राथमकिता दें। यह तो स्पष्ट है कि झगड़ें होते ही उस समय हैं जब सही या गलत, वैध या नाजायज संदेह और शिकायतें पैदा होने लगें, कुधारणा पैदा होना शुरू हो जाती हैं, ऐसे समय में एक मोमिन का काम है कि झगड़ों को लम्बा करने के स्थान पर, अपनी ज़िदों पर अड़ने के स्थान पर, अल्लाह तआला की ख़ुशी को के लिए अपने अन्दर नर्मी पैदा करने जमाअत के निज़ाम या कज़ा में अपने मामले लाएं और कोशिश यह होनी चाहिए कि हम सब आपस में भाई भाई हैं। हम ने इन ग़लत फहमियों या जायज़ नाजायज़ शिकायतों को दूर करके आपस में प्यार और मुहब्त से ज़िन्दगी गुज़ारनी है लेकिन अगर किसी के ज़िम्मे अधिकार बनता है और जिस का अधिकार बनता है दोनों ज़िद्दी स्वभाव के मालिक हों तो चाहे जमाअत की प्रणाली है या क़ज़ा है या देश की अदालत है यह सब जैसे भी न्यायपूर्ण फैसला करें कभी भी मामला अंजाम को नहीं पहुंचता। एक अदालत के बाद, दूसरी अदालत में अपीलें होती रहती हैं और फिर अगर कज़ा में पांच सदस्यीय न्यायिक बोर्ड भी निर्णय दे, तो फिर भी जिसके ज़िम्मा हक बनता है कई बार वह हक मार जाता है और हक नहीं देता या फैसला स्वीकार नहीं करता या फिर मुझे लिख देते हैं कि हम पर बहुत ज़ुल्म हुआ है आप ख़ुद इस मामला को देखें और ये शिकवे कभी खत्म नहीं होते और वास्तव में, जैसा कि मैंने कहा कि यह अंहकार ज़िद के कारण होता है।

इसलिए यदि झगड़ों को हम ने उत्तम रूप से निपटाना है, तो ज़िद्दों को छोड़ने की ज़रूरत है, बल्कि अगर कभी विवादों को दूर करने के लिए अधिकार अगर बनता भी है, तो उस हक के लेने में दूसरे पक्ष को सुविधा देने की ज़रूरत है और कभी-कभी हक छोड़ना भी पड़ जाता है इस बारे में अल्लाह तआला हमें क्या शिक्षा दे रहा है?

अल्लाह तआला का फरमाता है कि

وَاِنۡ كَانَ ذُوۡ عُسۡرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيۡسَرَةٍ ؕ وَاَنۡ تَصَدَّقُوۡا خَيۡرٌ لَّكُمۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ

(अल्बकर: 281)

और अगर कोई परेशान होकर आए तो सुविधा होने तक उस छुट देनी चाहिए, और अगर तुम अपने कर्ज़ माफ कर दो ख़ैरात कर दे तो ये बहुत अच्छा है अगर तुम जानते। तुम्हें पता होना चाहिए कि तुम पर ऐसे हालात आ सकते हैं जब मजबूरियां हों। और फिर सब से बढ़ कर ये कि अल्लाह तआला हमें हमारे बहुत से मामलों में छूट देता है अगर अल्लाह तआला जो सारी शक्तियों का मालिक है हमें पकड़ने लग जाए तो हमारा कोई ठिकाना न रहे।अत: ज़रूरी है कि हम एक दूसरे के मामले में नर्मी और सुविधा का व्यवहार करें। यह एक उसूली हिदायत है दैनिक मामलों में, कारोबार के मामलों में, कर्ज़ों के लेन देन के मामलों में भी ये चीज़ें हमेशा याद रखना चाहिए।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी मामिनों को बार-बार ध्यान दिलाया है कि तुम दुनिया में रहम और दया से काम लो तो असामान पर ख़ुदा तआला भी तुम पर दया का व्यवहार करेगा। (सुनान अबू दाऊद, किताबुल आदाब बाब फी रहमत हदीस, 4941) वरना हमें हर समय याद रखना चाहिए कि हमारा भी एक दिन हिसाब होगा। अगर अल्लाह तआला केवल हक पर फैसला करने लगे, तो माफी बहुत मुश्किल हो जाए। इसलिए अल्लाह की दया और क्षमा को अवशोषित करने के लिए, हमें दुनिया में अपने मामलों में दयालुता और करुणा का व्यवहार करना चाहिए न कि कठोरता और पकड़, और सिर्फ हमारे अधिकार की चिंता हो।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी कर्ज़ प्राप्त करने वालों को कर्ज़ देने वाले से नरमी का व्यवहार करने पर इनाम की ख़ुश ख़बरी दी है। अत: एक रिवायत में आता है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिस व्यक्ति ने किसी से कर्ज़ की राशि लेनी हो और वह इस की निर्धारित सीमा गुज़रने के बाद राहत देता है तो फिर हर दिन जो गुजरता है, वह इसके लिए सदका (दान) होगा। (सुनन इब्ने माजा,किताबुस्सदकात, हदीस 2418)

और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक जगह फरमाया कि सदका तथा ख़ैरात तुम्हारी विपत्तियों और कठिनाइयों और मुसीबतों को दूर करते हैं।

(कनज़ुल उम्माल, जिल्द 6, पृष्ठ 148 हदीस 15978, मुद्रित दारुल कुतुब बैरूत 2004 ई)

अत: क्या ही उच्च सौदा है कि अपने भाई को सुविधा देना इनाम का हकदार भी बना रहा है और कई विपत्तियों और मुश्किलों से भी हमें बचा रहा है। अत: अल्लाह तआला थोड़ी सी नेकी को भी इनाम बिना नहीं छोड़ता। अगर हम कुरआन करीम के इस सुनहरे नुस्ख़ा को याद रखें और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेश को सामने रखें तो एक शांतिपूर्ण समाज स्थापित हो। बैचेनियां फिर न फैलें। कभी रंजिशें लंबी न होती जाएं। निर्णयों को लागू करने वाली संस्थाओं की भी हानि न हो। वे इन विवादों को निपटाने के स्थान पर कोई रचनात्मक कार्य की योजना बना सकते हैं। कज़ा का भी हर्ज न हो यद्यपि कज़ा इस उद्देश्य के लिए बनाई गई है कि फैसले हों लेकिन अगर फैसलों के मानने में दोनों पक्ष नर्मी का सुलूक रखें तो अकारण हर्ज न हो। और कई बार एक ही मामला के लम्बा चलने के कारण कुछ दूसरे मामले प्रभावित होते हैं, वे प्रभावित न हों तो ख़ुद दोनो पक्षों को क़ज़ा में आने जाने और वकील करने के खर्च बर्दाशत करने पड़ते हैं इन से भी बचत हो जाए। कभी-कभी तो ऐसे ज़िद्दी होते हैं कि अपना नुकसान बर्दाशत कर लेते हैं लेकिन यही चाहते हैं कि यह निर्णय हमारे पक्ष में हो और इसके लिए जितना संभव हो सके किया जा सकता है किया जाए और फिर जैसे कि मैंने कहा कि कुछ लोग, कुछ पक्ष मुझे भी लिखते हैं कि अब आप इस मामले को देखें। तो अगर ज़िद्दें न हों अंहकार न हों तो मेरा भी समय व्यर्थ बातों से बच जाए। मैं कुछ मामलों को देखने के बाद, जब दोनों पक्षों को उत्तर देता हूं लेकिन अगर उनकी इच्छा का जवाब नहीं है, तो फिर भी वे अपनी बात पर, ज़िद पर स्थापित रहते हैं, अड़े रहते हैं कि नहीं हम ही ठीक हैं और यही ज़िद होती है कि निर्णय भी हमारे पक्ष में हो और सुविधा भी हम ने दूसरे पक्ष को कोई नहीं देनी मेरे स्पष्ट लिखने के बाद भी कई बार तीसरे चौथे महीने पत्र लिख जाते हैं कि हम ने अपने मामले के बारे में लिखा था और हम हक पर हैं, इस को दोबार देखा जाए को और हमें हक दिलवाया जाए।

मैं यह नहीं कहता कि कज़ा के निर्णय सौ प्रतिशत से सही होते हैं, लेकिन अस्सी पचासी प्रतिशत बहरहाल सही होते हैं, और जो गवाहियां और सबूत प्रस्तुत किए जाते हैं उन की रौशनी में वे सही होते हैं। अगर ग़लत भी होते हैं, तो निय्यत

पर शंका नहीं की जा सकती। अपनी तरफ से ये लोग ईमानदारी से निर्णय करते हैं इसलिए यदि किसी पक्ष के विचार में उस का हक बनता है लेकिन फैसला इसके ख़िलाफ है, तो उसे कज़ा या काज़ी पर दोष नहीं लगाना चाहिए। कुछ लोगों को यह आरोप लगाने की आदत पड़ जाती है। उन्होंने सच्चाई के अनुसार ही फैसला किया होता है यदि किसी फैसले में कोई शंका हो या दूसरे पक्ष के विचार में इस फैसला में कोई शंका है तो इस पक्ष के निवेदन पर कई बार मैं भी फाइल मंगवाकर देख लेता हूं लेकिन जैसा कि मैंने कहा कि अधिकतर निर्णय सही होते हैं और केवल कुधारणा के कारण संदेह और शंकाएं दिल में पैदा किए जाते हैं अत: कुधारणा से बचना चाहिए। कुधारणा भी एक और बुराई का रास्ता खोल देती है

कज़ा के मामले प्रत्यक्ष लेनदेन के हों, व्यवसाय या व्यावहारिक हों, हर मामले में वे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष वित्तीय लेनदेन का मामला बन जाता है। कहीं हक मेहर का अदा करना है कहीं सामानों का अदा करना है, पति पत्नी के झगड़ों में लेनदेन के मामलों में तो प्राय वित्तीय मामले ही होते हैं। तो बहरहाल, मामले हर झगड़े में किसी न किसी न प्रकार शामिल हो जाते हैं और सुविधा देने वाले जो सिद्धांत है कि सुविधा दी जाए यह प्रत्येक स्थान पर कुछ न कुछ ज़रूर चलता है। व्यावहारिक मामलों में नकद रकम की मांग, लेनदेन में बहुत सारे मामलों में भी प्राय रकम की मांग होती है। जैसा कि मैंने कहा हक महर की अदायगी है। यह भी एक ऐसा कर्ज़ भी है जो पति के ज़िम्मा है। लेकिन कभी-कभी, लड़की वाले लड़के की हैसियत से अधिक हक महर रखवा लेते हैं । एक ओर तो लड़का पाबन्द होता है कि कर्ज़ को अदा करे। हक महर एक कर्ज़ है। दूसरी ओर, लड़की वाले भी ज़यादती कर जाते हैं कि हक महर अधिक रखवा लेते हैं ताकि किसी प्रकार लड़के को बांध लिया जाए जो लड़के के लिए अदा करना मुश्किल होता है और केवल मुश्किल ही नहीं होता बल्कि दूसरा ्क्ष इसे अदा करने की क्षमता ही नहीं रखता। अगर कज़ा लड़के की अवस्था ो देख कर हम महर कम कर दे, तो फिर दूसरे पक्ष के आरोप शुरू हो जाते हैं। इसी तरह, प्रत्यक्ष कर्ज़ के लेनदेन के मामले हैं। इस में अगर कज़ा स्थिति को देखते हुए किस्तें निर्धारित कर दे, तो इस पर भी दूसरे पक्ष आरोप है जाता है

हम अहमदी एक शांतिपूर्ण समाज के बारे में जब दुनिया को कहते हैं, तो हमें भी अपने प्रत्येक मामले में भी समाज में शांति स्थापित करने की कोशिश करनी चाहिए। सहाबा पारस्परिक हित के मामले में कैसे व्यवहार करते थे इसकी एक झलक एक घटना से मिलती है।

हज़रत अबू कतादह के बारे में आता है कि एक मुसलमान के ज़िम्मा उनका कुछ कर्ज़ था। जब भी वह एक कर्ज़ की मांग करने के लिए जाते तो था वह छुपा जाया करता था। एक दिन वह गए तो उस के बेटे से पता चला कि घर पर ही है उन्होमने बाहर से आवाज़ दी और कहा कि मुझे पता है कि तुम घर पर ही हो। इसलिए अब झुपने का कोई लाभ नहीं है। बाहर आओ और मुझ से बात करो जब वह व्यक्ति बाहर आया, तो उन्होंने उस से छुपने का कारण पूछा, तो उस ने कहा कि वास्तविकता यह है कि मैं आज कल मैं बहुत आर्थिक तंगी में हूं। मेरी वित्तीय स्थिति ख़राब है मेरे पास कुछ नहीं है इसके साथ-साथ यह भी कि मैं फैमली वाला हूं बच्चे बहुत हैं। इन के भी खर्च पूरे करने हैं। अबू कतादह ने कहा, " क्या वास्तव में एसा है जैसा कि तुम कह रहे हो?" तो उसने कहा कि ख़ुदा की कसम मेरा यही हाल है इस पर उन्होंने अपना सारी कर्ज़ माफ कर दिया।

(सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाक बाब फज़ल अन्ज़ारुल मअसर हदीस 4000)

तो यह वह रवैया जो मामिनों में एक दूसरे के प्रति सौहार्दपूर्ण दृष्टिकोण और मुहब्बत और स्नेह फैलाने वाला है, जिस से शांति का माहौल स्थापित होता है। लेकिन इस में कर्ज़ देने वाो की स्थिति का भी वर्णन है। वह ज़िद्दी और पैसा हज़म करने वाला नहीं था, बल्कि उसे इहसास और शर्मिन्दगी है कि वह कर्ज़ अदा नहीं कर सकता। लेकिन यह नहीं कि देना नहीं है हालांकि आज कल ऐसे मामले भी सामने आ जाते हैं जो इस से बिलकुल उलट हैं कि कर्ज़ा ले लेते हैं और फिर यह साबित करने का प्रयास करतें हैं कि हमने नहीं लिया था। अत: समाज की शांति दोनों पक्षों के व्यवहार द्वारा स्थापित होती है। कर्ज़ देने वाला या जिस का हक बनता है इस की तरफ से सुविधा देने से और कर्ज़ अदा करने वाले या जिस के ज़िम्मा कर्ज़ का अदा करना है इस की तरफ से ज़िम्मेदारी के इहसास के कारण और चिन्ता के कारण से।

इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर हमें भी इस प्रकार की भावनाएं पैदा करने की आवश्यकता है। कज़ा चाहे सुविधा दे या न दे या कज़ा किसी को अदा करने के लिए पाबन्द करे या न करे, हक लेने वाले को अपनी नरम भावनाओं को व्यक्त करना चाहिए और हक देने वाले को अदा करने की जिम्मेदारी का इहसास कर के फिर इस को अदा करने के लिए भरपूर कोशिश करनी चाहिए।

हक अदा न करना और इस पर फिर डिठाई करना इस की एक घटना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह अन्हो वर्णन करते हैं। फरमाते हैं कि एक व्यक्ति के एक घर का मुकदमा था। क़दायान में किराएदारों उस का मकान खाली नहीं कर रहे थे वह व्यक्ति जिसका मकान था कादियान में नहीं रहता था, बल्कि फौज में नौकरी किया करता था और कुछ दिनों के लिए वह कादियान में आया करता था। हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि मैंने उसे कहा कि तुम फौज में मुलाज़िम हो। तुम कादियान केवल पन्द्रह बीस दिन के लिए आते हो। इतना लंबा समय तुम मेहमान खाना में रह सकते हो। लंगर खाने में या दारुज़्ज़यिाफत में या अपने किसी दोस्त के पास रह सकते हो। इस समय यहां घरों की कमी है यदि तुम ने किरायेदार को कुछ दिनों के ठहरने के लिए निकाला तो उसे बड़ी कठिनाई होगी। फिर आपने इसे एक उदाहरण दिया कि देखो सहाबा ने बाहर से आने वालों को तो अपनी संपत्तियां भी दे दीं, लेकिन तुम दस पन्द्रह दिन के ठहरने के लिए साढ़े ग्यारह महीने रहने वाले को घर से निकाल रहे हो। आप फरमाते हैं कि मेरी इस बात का इस पर बड़ा असर हुआ।कहने लगा हुज़ूर आप सहीह फरमाते हैंइसे तंग करना मेरी ग़लती है लेकिन आप इस किरायेदार से भी तो पूछें कि इसने पिछले आठ नौ महीने से मेरा किराया नहीं दिया, जिसके कारण से मैंने सोचा कि इस से घर ख़ाली करा लूं। हज़रत मुस्लेह मौऊद ने फरमाया कि इस पर मैंने इस मकान के मालिक से कहा था कि यह उचित कारण है और तुम्हारा कोई कुसूर नहीं है। इसी का है जो अपना मामला पेश कर रहा है और यह भी नहीं बता रहा कि मैंने इतने महीनों से किराया भी नहीं दिया है। आप फरमाते हैं कि उस समय मेरी अजीब स्थिति थी कि मैंने जो मकान का मालिक था उस के दिल को नर्म करने की कोशिश की थी लेकिन उसने एक एसी बात कर दी जिस की मेरे पास कोई जवाब नहीं था कुछ किया जो मेरे पास कोई जवाब नहीं था। यदि दूसरे पक्ष ने किराया अदा किया होता तो फरमाते हैं कि मैंने किला फतह कर लिया था। फिर जो मैं फैसला करना चाहता था वह होता, लेकिन उसने किराया भी नहीं दिया और वह कब्जा करना चाहता था। आप फरमाते हैं कि मेरी स्थिति इस प्रकार थी, जैसा कि कहते हैं कि एक पठान था, उसने कहीं से भी सुन लिया कि अगर किसी को कलमा पढ़ा लिया जाए, तो मनुष्य जन्नत में चला जाता है। उस ने एक हिन्दू को पकड़ लिया कि कलमा पढ़ो। हिंदू ने कहा कि मैं हिंदू हूं। मुझे कलमा से क्या मतलब? उस ने कहा, " नहीं पढ़ो और तलवार निकाल ली कि वरना मैं तुम्हें कत्ल कर दूंगा।" आख़िर हिन्दी ने कहा अच्छा,पढ़ाओ मुझे कलमा। पठान कहने लगा तुम ख़ुद पढ़ो मैंने नहीं पढ़ाना। हिन्दू कहने लगा मैं किस तरह पढ़ सकता हूं मुझे क्या पता कलमा क्या होता है तुम मुसलमान हो तुम मझे पढ़ाओ तुम्हें आता होगा पठान कहने लगा मुझे तो नहीं आता। आज किस्मत ख़राब है वरना आज में ने तुम्हें कलमा पढ़ा कर जन्नत में चले जाना था। आप फरमाते हैं इसी तरह मैं ने नसीहत कर के मालिक मकान का दिल नर्म किय जब दिल नरम हो गया, तो उसने एक एसी बात की कि मेरा कलमा वहीं का वहीं रह गया। अगर दूसरे पक्ष ने किराया अदा किया होता हक न मारा होता तो मैं मालिक को कलमा पढ़ा लेता।

(उद्धरित मुसलमानों ने अपने शासन के समय में नैतिकता का उच्च नमूना दिखाया, अनवारुल उलूम, जिल्द 18 पृष्ठ 220 से 221)

अत: मोमिनों को एक दूसरे का हक़ अदा करने में चुस्ती दिखानी चाहिए और यह सिर्फ एक ऐसी घटना नहीं प्राय: घटनाएं हैं । इसलिए, जब मामले कज़ा में आते है या समय के ख़लीफा के सामने प्रस्तुत होते हैं, तो सारी बात सच्चाई पर

आधारित होनी चाहिए बजाय इस के की अपनी बात कर के बाद में समय के ख़लीफा को शर्मिन्दा होना पढ़े। उसे शर्मन्दगी से भी बचाने की कोशिश करनी चाहिए।

आज जैसा कि मैंने कहा कई मामले ऐसे भी हैं कि हक लेने वाले के व्यवहार को हम नरम भी कर भी लें तो हक देने वाले का व्यवहार मामला आगे नहीं बढ़ने देता और फिर यह भी शिकवा है कि हमारे साथ नरमी नहीं की गई।

इस उद्धरण से सुन्दर समाज की स्थापना के बारे में कैसी बातें होनी चाहिए? किस तरह का समाज होना चाहिए? मुसलमानों में दोनों तरफ जो पक्ष हैं उन को किस प्रकार अपना अधिकार अदा करना चाहिए? इस संबंध में, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कुछ उपदेश प्रस्तुत करता हूं।

आप एक मौका पर आपस के मामलों में नरमी पैदा करने वाले को दुआ देते हुए फरमाते हैं कि अल्लाह तआला आसानी पैदा करने वाले आदमी पर रहम फरमाए जब वह ख़रीदता और बेचता है और जब वह उधार की वापसी की मांग करता है।

(सही अलबुख़ारी, किताबुल बयूअ हदीस 2076)

फिर आप ने आसानियां पैदा करने वालों को सुसमाचार देते हुए और दूसरों को इसकी प्रेरणा दिलाते हुए फरमाया कि अल्लाह तआला ने एक व्यक्ति को जन्नत में दाख़िल किया जो ख़रीदते और बेचते समय और कर्ज़ देते समय और कर्ज़की मांग करते समय आसानी पैदा करता था इस बात पर ही इस को जन्नत में दाख़िल किया।

(सहीह अल्बुख़ारी किताब अहादीसुल अंबिया बाब मा ज़कर अन बनी इस्राईल हदीस 3451)

फिर एक रिवायत में आता है कि आपने फ़रमाया कि जिस व्यक्ति ने तंगदस्त कर्ज़ा लेने वाले को कर्ज़ा अदा करने में सुविधा दी या माफ कर दिया तो क़यामत के दिन जब अल्लाह तआला की छाया के अलावा कोई छाया नहीं है, तो अल्लाह तआला उसे अपने सिंहासन के नीचे छाया देगा।

(सुनन अत्तिर्मज़ी हदीस 1306)

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक व्यक्ति के साथ अल्लाह तआला की क्षमा की वर्णन करते हुए फरमाया कि एक व्यापारी लोगों को कर्ज़ा दिया करता था अगर वह किसी तंग आदमी को देखता है, तो वह अपने कर्मचारियों को कहता कि इस को छोड़ दो। शायद अल्लाह तआला हम को भी छोड़ दे। आप फरमाते हैं कि उसके इस कार्य के कारण अल्लाह तआला ने उस को छोड़ दिया।

(सही अल्बुख़ारी, किताबुल बयूअ, हदीस 2078)

अत: जिन्हें तौफ़ीक़ हो उन्हें चाहिए कि जिस हद तक संभव हो सुविधाए दें बजाए इसके कि लड़ाई झगड़ों और अदालतों में व्यर्थ समय बर्बाद करें और रकम खर्च करें।

लेकिन इस्लाम न केवल यह नहीं कहता है कि कर्ज़ देने वाले और हक लेने वाले ये सुविधाओं दें। इस्लाम एक ऐसा समाज स्थापित करता है और प्रत्येक पक्ष को उस के कर्तव्यों की तरफ ध्यान दिलाता है जिस से दिलों की नफरतें दूर हों और अमन भी स्थापित हो। इस लिए जिस के ज़िम्मा हक को अदा करना है उन्हें भी बहुत नसीहत करता है। अब, हज़रत मुस्लेह मौऊद ने जो उदाहरण दिया था और बहुत से उदाहरण सामने आ जाते हैं कि लोग बिना किसी मजबीरू के हक की अदायगी में बहानों से काम लेते हैं और ऐसे लोगों का कभी निज़ाम साथ नहीं देता और न दे सकता है अगर ऐसे लोगों को साथ देने लग दाएं तो फिर अधिकार मारने वालों को खुली छूट मिल जाएगी और अमन के स्थान पर समाज में उपद्रव और भ्रष्टाचार फैल जाएगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की शर्तों में एक शर्त यह भी है कि फसाद से बचने की कोशिश करता रहूंगा। (उद्धरित इज़ाला औहाम रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 3,पृष्ठ 564)

अत: आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस बारे में भी हमें हिदायत प्रदान की है। एक रिवायत में आता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि धनी का कर्ज़ अदा करने में टाल मटोल से काम करना ज़ुल्म है। यदि तुम में से किसी को चोल मटोल का पीछा करने को कहा जाए तो चाहिए के इस टाल मटोल करने वाले का पीछा करे अर्थात फिर मजबूर कर के इस से दूसरों का हक दिलवाया जाए कर्ज़ अदा करवाया जाए।

(सहीह अलबुख़ारी किताबुल अकज़िया हदीस 2287)

यहाँ कोई नर्मी नहीं है। क्योंकि इस दूसरे पक्ष को तौफीक़ है लेकिन जैसा कि मैंने कहा, यदि वे नहीं करेंगे, तो इस से हक मारने वालों को छीनने वालों को साहस मिलेगा और वे बढ़ते चले जांएगे।

फिर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक स्थान पर फरमाया था कि कर्ज़ अदा करने वालों का टाल मटोल करना उस की इज़्ज़त और उसके सम्मान को हलाल कर देता है।

(सुनन अबू दाऊद किताबुल अकज़िया हदीस 3628)

अत: जमाअत के निज़ाम का कर्तव्य है कि ऐसे अधिकार छीनने वालों को अगर वह सहयोग नहीं करते तो सज़ा दे। इसलिए जब कज़ा के फैसलों के अनुसार अनुकरण न करने वालों और हक मारने वालों को सज़ा मिलती है तो फिर उन्हें शोर नहीं मचाना चाहिए कि हम से नर्मी का व्यवहार नहीं किया गया। अल्लाह तआला के रसूल ने उन्हें सज़ा दिए जाने का हक जमाअत के निज़ाम को दिया है। राष्ट्रीय कानून भी ऐसे लोगों को भी सज़ा देता है।

फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक बड़ा भय दिलाने वाला उपदेश है कि जो आप ने हक अदा न करने वालों को फरमाया है कि अगर हक मारने वाले इसे अपने सामने रखें तो कभी किसी का हक मारने का न सोचें। आप ने फरमाया कि जिस व्यक्ति ने लोगों से वापस करने की निय्यत से माल लिया या कर्ज़ लिया अल्लाह तआला उसकी तरफ से अदा करवा देगा और फरमाया कि जो व्यक्ति माल खाने और नष्ट करने के इरादे से लेगा अल्लाह तआला उसे नष्ट कर देगा।

(सहीह अल्बुख़ारी हदीस 2387)

अत: अगर नीयत नेक हो तो अल्लाह तआला संसाधन और माध्यम पैदा फरमा देता है या कर्ज़ देने वाले के दिल में नरमी की भावनाएं पैदा कर देता है। लेकिन यदि इरादा ही नेक नहीं है, तो अल्लाह तआला उसे सज़ा देता है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो आम तौर पर उस व्यक्ति का नमाज़ जनाज़ा नहीं पढ़ते थे, जिसके ज़िम्मे कर्ज़ हो और उसकी संपत्ति या धन इस कर्ज़ के अदा करने वाली न हो।

(सही अल्बुख़ारी, किताब फिल इस्तकरा हदीस 2289)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कर्ज़ से बचने की दुआ भी किया करते थे बल्कि कर्ज़ और कुफ्र को आप ने मिलाया है। अत: एक रिवायत है साहबी कहते हैं कि मैंने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फरमाते

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

हुए सुना कि मैं कुफ्र और कर्ज़ से अल्लाह तआला की पनाह मांगता हूं। एक व्यक्ति ने कहा, "हे अल्लाह के रसूल! क्या कर्ज़ का मामला कुफ्र के बराबर किया जाएगा? इस पर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया हां।

(सुनन अन्निसाई हदीस 5475)

इसके बारे में और स्पष्टीकरण हज़रत आयशा की रिवायत से भा मिलती है। आप फरमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ में प्रार्थना करते थे, "हे अल्लाह! मैं गुनाहों और कर्ज़ से आपकी आश्रय चाहता हूं किसी ने कहा, "हे अल्लाह के रसूल!" आप अल्लाह से कर्ज़ से मुक्ति के बारे में कितना आश्रय लेते हैं? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया एक आदमी जब कर्ज़ ले लेता है तो वह बोलते हुए झूठ बोलता है।

(सही अलबुख़ारी, किताबुल अज़ान, हदीस 832)

अत: यह वजह है कि पनाह मांगनी चाहिए और सीधा कर्ज़ लने वाले भी कर्ज़ लेने से बचें। उन्हें बचना चाहिए और यदि ले लिया है, तो फिर अदा करने की तरफ भी ध्यान होना चाहिए और हकूक का अदा करना जो कर्ज़ों की तरह है इस के अदा करने की तरफ भी गम्भीरता से ध्यान देना चाहिए।

कज़ा के फैसलों के बाद अगर हकूक और कर्ज़ माफ करवाने हों तो फिर दूसरे पक्ष से माफ करवाना चाहिए। जिस का हक अदा करना है वही अपना हक अदाकर सकता है या इस में छूट दे सकात है। इसलिए जमाअत के लोगों को इस तरफबहुत ध्यान देने की ज़रूरत है

कर्ज़ों के अदा करने का बारे में हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल रज़ि अल्लाह ने एक नुस्ख़ा बताया है। बहुत सारे लोग कर्ज़ों के बारे में लिखते हैं, तो वे इनका पालन करें। आपने फरमाया कि एक तो इस्तिग़फार बहुत अधिक किया करो दूसरे यह कि फज़ूल खर्च करना छोड़ दो अधिकतर कर्ज़े लोग इसलिए लेते हैं कि पज़ूल खर्ची कर रहे होते हैं। कामनाएं बढ़ा रहे होते हैं और तीसरे आप ने फरमाया कि अगर एक पैसा भी मिले, तो इसे कर्ज़ देने वाले को दे दें।

(उद्धरित बदर, जिल्द 11, नंबर 2 से 3, दिनांक 9 नवंबर 1 9 11 ई, पृष्ठ 3)

थोड़ी थोड़ी रकमें भी अगर तुम्हारे पास आती हैं और अपने खर्च करने के बाद जिस सीमा तक तुम उसे अदा करने की ताकत रखते हो तो वह अदा करने की तरफ ध्यान करो। जमा करते जाओ या वैसे किस्तें अदा करते जाओ। बहर हाल एक फिक्र होनी चाहिए कि छोटी से छोटी बचत होती है तो अपने आप को तकलीफ में डाल कर बचत करनी है तो इस से कर्ज़ को अदा करना चाहिए।

कुछ लोग शौक में कर्ज़ लेते हैं, यह फज़ूल खर्ची है किसी ने मुझे लिखा है कि मेरे पास कार है, लेकिन मुझे अमुक कार बहुत पसंद है और पैसा नहीं है क्या मैं बैंक से कर्ज़ लेकर उस कार को खरीद सकता हूं? अगर एक बार इंसान कर्ज़ ले, तो कर्ज़ों में धंसता चला जाता है अत: इन व्यर्थ इच्छाओं से बचना चाहिए। इसी तरह, कई लोगों ने कारोबार शुरू करने हैं कोई अनुभव नहीं है। आप युवा हैं और व्यापार के नाम पर लोगों से पैसे ले लें। अनुभव नहीं होने के कारण सारा व्यवसाय समाप्त हो गया। ख़ुद भी ज़रूरत वाले हो गए और लोगों के पैसे भी ले डूबे। तो ऐसे लोगों को भी सावधानी करनी चाहिए और देने वालों को भी बजाय इस के कि बाद में शिकवे पैदा हों और मुकदमें करें। पहले ही सोच समझ कर किसी को कर्ज़े देने चाहिए। अगर कारोबार में भी लगाना हो तो क्योंकि इन की अपनी भी रकम डूबती है और जिस व्यक्ति को दिया होता है, वह बेचारा भी, बेचारा तो नहीं होता कई बार तो शरारत से लोग कर रहे होते हैं या नेक निय्यत ही नहीं होती इसलिए फिर मुकदमा में फंसकर अपमानित और ज़लील हो रहे होते हैं बहरहाल इन बातों से हमें बचना चाहिए ताकि एक शांतिपूर्ण समाज को हमेशा हमारे अंदर स्थापित रहे।

अल्लाह तआला हमें अपने जीवन में एक सच्चे मोमिन का रंग पैदा करने की तौफीक दे और एक शांतिपूर्ण समाज हम स्थापित करने वाले हों और जो उच्च चरित्र हैं, नैतिकता के उच्चतम मापदंड हैं, जिन की हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमसे आशा रखी है। जिनका कुरआन में भी उल्लेख है, जिन पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी ध्यान दिलाया उन्हें हम अपनाने वाले हों।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

नहीं आता बल्कि ख़ुदा तआला की इच्छा से आता है। इसलिए जो व्यक्ति अल्लाह तआला के लिए कुछ हिस्सा माल छोड़ता है वह ज़रूर उसे पाएगा। लेकिन जो व्यक्ति माल से प्यार करके खुदा की राह में वह सेवा नहीं करता जो करनी चाहिए तो वह निश्चित रूप से इस माल को खोएगा। यह मत विचार करो कि माल तुम्हारी कोशिश से आता है। बल्कि अल्लाह तआला से आता है और यह मत विचार करो कि तुम कोई हिस्सा माल देकर या किसी और रंग से कोई सेवा कर के अल्लाह तआला और उसके फरस्तादा पर कुछ एहसान करते हो। लेकिन यह उसका एहसान है कि तुम को इस सेवा के लिए कहता है। ..मैं बार बार तुम्हें कहता हूँ कि अल्लाह तआला तुम्हारी खदमतों का मोहताज नहीं। हाँ आप यह उसकी कृपा है कि तुम को सेवा का मौका देता है। "

(मजमूआ इश्तिहार जिल्द 3 पृष्ठ 498-497)

"मैं वास्तव में समझता हूँ कि कंजूसी और ईमान एक ही दिल में जमा नहीं हो सकते। जो व्यक्ति सच्चे दिल से अल्लाह तआला पर ईमान लाता है। वह अपना माल केवल माल नहीं समझता कि इस के सन्दूक में बंद है बल्कि वह अल्लाह तआला के सभी खज़ानों को अपना खज़ान समझता है और कंजूसी इस प्रकार उस से दूर हो जाता है जैसा कि प्रकाश अंधेरे से दूर हो जाता है ... अगर तुम कोई नेकी का काम करोगे और उस समय कोई सेवा करोगे तो अपनी ईमानदारी पर मुहर करोगे और तुम्हारी उम्रें ज्यादा होंगी और तुम्हारे मालों में बरकत दी जाएगी । "

(मजमूआ इश्तिहार जिल्द 3, पृष्ठ 498)

"हमारे निकट सबसे बड़ी जरूरत आज इस्लाम का जीवन है। इस्लाम सभी प्रकार की सेवा का मोहताज है। उसकी ज़रूरतों पर हम किसी आवश्यकता को प्राथमिकता नहीं दे सकते ... आज सबसे बड़ी ज़रूरत यही है कि जहां तक संभव हो और बन पड़े इस्लाम की सेवा की जाए। जितना रुपया हो वह इस्लाम की पुनरुद्धार पर खर्च किया जाए। "

(मल्फूज़ात जिल्द 2 पृष्ठ 327)

"प्रत्येक व्यक्ति जो अपने आप को बैअत वालों में से समझता है उसके लिए अब समय है कि अपने माल में से भी सिलसिला की सेवा करे ..... प्रत्येक बैअत करने वाले को अपनी सामर्थता के अनुसार सहायता करनी चाहिए ताकि अल्लाह तआला भी उन्हें मदद दे ..... प्रत्येक व्यक्ति की सच्चाई इस की सेवा से पहचानी जाती है। प्रियो यह धर्म के लिए और धर्म के उद्देश्यों की सेवा का समय है इस समय को ग़नीमत समझो कि फिर कभी हाथ नहीं आएगा। "

(कश्ती नूह, रूहानी खज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 83)

"माल से प्यार मत करो। क्योंकि वह समय आता है कि अगर तुम धन को नहीं छोड़ते तो वह तुम्हें छोड़ देगा। "

(मजमूआ इश्तिहार जिल्द 3, पृष्ठ 318)

एक व्यापक अपदेश:

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफतुल मसीह अय्यदहुल्लाह तआला फरमाते हैं कि

" इस समय जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का ज़माना है इसमें एक जिहाद वित्तीय बलिदान का जिहाद भी है, क्योंकि इसके बिना न इस्लाम के बचाव में साहित्य प्रकाशित हो सकता है, न कुरआन के विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हो सकते हैं, न इस अनुवाद को दुनिया के कोनों तक पहुँच सकते हैं। न मिशन खोले जा रहे हैं, न मुरब्बियान, मुबल्लिग़ तैयार हो सकते हैं और न मुरब्बियों, मुबल्लिग़ों को जमाअतों में पहुंचाया जा सकता। न तो मस्जिदें बनाई जा सकती हैं। न विद्यालय, कॉलेजों के द्वारा ग़रीब लोगों को शिक्षा की सुविधा प्रस्तुत कर सकते हैं। न ही अस्पतालों के द्वारा दुखी मानवता की सेवा की सा सकती है। अत: जब तक दुनिया के सारे किनारों तक और हर किनारे तक हर व्यक्ति तक इस्लाम का संदेश नहीं पहुंच जाता और जब तक ग़रीब की ज़रूरतों को पूरी तरह से पूरा नहीं किया जाता तब तक यह वित्तीय जिहाद जारी रहना है। और प्रत्येक अहमदी ने अपनी अपनी क्षमता और सुविधा से इस में शामिल होना फर्ज़ है। "

(ख़ुत्बा जुम्अ: 31 मार्च 2006 मुद्रित अल्फज़ल लंदन 21 अप्रैल 2006 पृष्ठ 6)

(शेष.....)

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अप्रैल 2017 ई. (भाग -9)

☆ हम जहां भी जाते हैं प्यार, शांति और सुरक्षा का संदेश देते हैं और यह इस्लाम की शिक्षा है।

☆ कुरआन की शिक्षा के अनुसार हर अहमदी जहां अपनी मस्जिद की रक्षा करने वाला हो वहाँ वह चर्च की रक्षा करने वाला भी हो। वहाँ वह सेनागाग की सुरक्षा करने वाला भी हो और वहाँ वे दूसरे धर्मों के इबादत स्थलों की रक्षा करने वाला भी हो।

☆ मस्जिद बनने के बाद इंशा अल्लाह आप देखेंगे कि यहां के रहने वाले अहमदी पहले से बढ़कर यहाँ के लोगों का अधिकार अदा वाले होंगे

☆ इस्लाम के संस्थापक ने कहा कि देश से प्रेम तुम्हारे ईमान का हिस्सा है। अतः हमारे ईमान की भी यह मांग है कि जिस जिस देश में जहां अहमदी रहता है वहाँ उस से प्यार करे और उसके सुधार के लिए काम करे और वहाँ के लोगों में प्रेम और शांति और प्यार का संदेश पहुंचाए और फैलाए।

मारबर्ग मस्जिद के शिलान्यास समारोह के अवसर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का ईमान वर्धक संबोधन

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

18 अप्रैल 2017 (दिन मंगलवार) (शेष....)

मेहमानों की अभिव्यक्तियां

आज मस्जिद के इस शिलान्यास समारोह में 135 मेहमान शामिल हुए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के भाषण का इन मेहमानों पर गहरा असर हुआ। कई मेहमानों ने अपनी हार्दिक भावनाएं और भाव व्यक्त किए। ये प्रतिक्रियाएं यहाँ प्रस्तुत की जा रही हैं।

*एक डॉक्टर महिला ने कहा: ख़लीफा का ख़िताब बहुत प्रभावी था। दिल की गहराई तक असर करने वाला था। विशेषकर प्रेम और शांति का संदेश, अगर हम में से प्रत्येक अपने पड़ोसियों का ध्यान रखने वाला बन जाए जैसा ख़लीफा ने कहा तो दुनिया कहीं अधिक सुन्दर हो।

*एक ईसाई मेहमान ने कहा कि "ख़लीफा अच्छे आचरण स्वाभाविक स्पष्ट है " उन्हें यह बात महत्वपूर्ण लगी कि जमाअत के दोस्तों का अपने ख़लीफा से गहरा संबंध है। आपका कार्यक्रम बहुत संगठित था। मैं आगे भी आप के कार्यक्रमों में आया करूंगा।

*एक मेहमान ने कहा चूंकि मैं जमाअत और ख़लीफा को पहले से ही जानता हूँ इसलिए ख़लीफा का ख़िताब मेरी उम्मीदों के अनुसार उत्कृष्ट था।

*एक मेहमान ने बताया कि उसे एक सीरियाई दोस्त ने कहा था कि अहमदी तो मुसलमान ही नहीं इसलिए उनसे दूर रहना चाहिए। उसे वह अब Ball Point बतौर तोहफ़ा देगा जो उसे जमाअत की तरफ से दिए गया और जो जिस पर मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी से नहीं का संदेश दर्ज है। अहमदी दूसरे मुसलमानों की तुलना में अधिक इस्लाम का पालन करने वाले हैं और उनके लिए नमूना हैं।

* Mr Gabriel जो पेशे से चीफ इंस्पेक्टर हैं कहते हैं: ख़लीफा का ख़िताब यादगार और शानदार था। विशेषकर पड़ोसियों के अधिकार का विवरण।

*एक मेहमान ने कहा ख़लीफा ने बड़ा स्पष्ट वर्णन किया है कि इस्लाम का आतंकवाद से कोई संबंध नहीं है। इस्लाम एक शांतिपूर्ण धर्म है। इसके बावजूद इस्लाम के विषय में पूर्वाग्रह करते रहते हैं।

* एक मेहमान ने कहा ख़लीफा ने बड़े अच्छे अन्दाज़ में बताया कि "अहमदी शांतिपूर्ण मुसलमान हैं। "

*एक सिविल इंजीनियर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि नज़र आ रहा था कि कोई प्रभाव रखने वाला व्यक्ति बात कर रहा है और जो कुछ भी हुज़ूर ने कहा सकारात्मक रंग में कहा। इसलिए इतनी अधिक संख्या में लोग आप का अनुकरण करते हैं। उनका कहना था कि इस बात का अंदाज़ा मुझे दुआ करने के समय हुआ जब हुज़ूर के संकेत पर सभी लोगों ने दुआ करनी शुरू कर दी।

*एक महिला ने कहा ख़लीफा के पड़ोसियों के अधिकार की ओर ध्यान आकर्षित करना उन्हें विशेष रूप से बहुत अच्छा लगा। अगर हम इस संदेश के एक भाग पर भी पालन करने वाले हो जाएँ तो दुनिया पहले से बहुत शांतिपूर्ण और सुखद हो।

*वकालत के एक छात्र जर्मन मेहमान Mr Maximillian Ruben ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा। ख़लीफा के भाषण ने उसके दिल पर गहरा असर किया है। ख़लीफा ने दूसरे दो वक्ताओं के Points लिए और अपने संबोधन में इन बिंदुओं का उल्लेख करके विवरण के साथ इस्लामी बात को प्रस्तुत किया और एक ज़बरदस्त किस्म का Conclusion दिया। महोदय ने कहा भी विभिन्न स्थानों पर व्याख्यान देता रहता हूँ लेकिन जिस तरीके से ख़लीफा ने छोटी बुनियादी बातों को अपने संबोधन में उल्लेख किया है, मेरे निकट इससे बेहतर और अधिक उत्कृष्ट अंदाज़ में पेश नहीं किया जा सकता था। महोदय ने कहा पहले मैं ने ख़लीफा को बस TV या वीडियो में देखा था और अब मैं पहली पंक्ति में बैठ कर सीधा देख रहा हूं। मुझे इसका विश्वास नहीं आ रहा।

*पुलिस विभाग से संबंधित एक तुर्क मेहमान ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, 'मैं आज समारोह और ख़लीफतुल मसीह के संदेश से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। आप लोग इसी तरह इस्लाम का शांति का संदेश जगह जगह पर देते रहे तो जल्द ही बहुत सफलता पाएंगे। महोदय ने कहा आप की प्रणाली से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। आप की जमाअत में प्रत्येक छोटी से छोटी बात बहुत गहरी फिलासफी के आधार पर और उत्कृष्ट बुनियाद के अधीन चल रही है। ऐसा संगठित आयोजन तथा प्रबंध और कहीं देखने को नहीं मिलता। मैंने आप की व्यवस्था से बहुत कुछ सीखा है।

*दो मेहमान Andreas Wirth और Silvia Reiter ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हें यह पता नहीं था कि ख़लीफतुल मसीह इतने अच्छे तरीके से इस्लामी शिक्षाओं को पेश करेंगे। खासकर वे शिक्षाएं जो देश के कानून की पाबंदी के बारे में हैं। यह शिक्षा आपसी समझ के लिए बहुत आवश्यक है और कई समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती हैं। हुज़ूर अनवर की कुव्वत कुदसिया आप के Tent में प्रवेश से लेकर फिर बाहर पधारने तक महसूस हो रही थी।

*एक मेहमान Michael Saulheimer ने कहा: हमें यहां आकर बहुत अपनापन महसूस हुआ है। मुझे ईसाइयों के भी कई कार्यक्रमों में शामिल होने का मौका मिला है लेकिन वहाँ ऐसा अपनापन महसूस नहीं हुआ। ईसाई इस विषय में आप लोगों से बहुत कुछ सीख सकते हैं।

* जर्मन रेड क्रास के एक क्षेत्र के इन्चार्ज Mr Volker Dress ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा: ख़लीफा के शब्द चरम प्रभावशाली थे और ख़लीफा का व्यक्तित्व बहुत जादू वाला है। बहुत ही न्यायपूर्ण और निष्पक्ष व्यक्ति हैं। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि सारे इंसान बराबर हैं हर किसी का सम्मान करना चाहिए। सही बात कही है।

*एक मेहमान Mr Stefan Wasmuth ने कहा: मैं पहले जमाअत को नहीं जानता था। जिस तरह एक धार्मिक नेता होना चाहिए आप के ख़लीफा में वे सारी सारी खूबियां पाई जाती हैं। ख़लीफा ने प्रभावी ढंग से दुनिया के हालात के विषय में हमें सूचित किया है और विशेष रूप से इस्लाम की शांति की शिक्षा को स्पष्ट रूप से हमारे सामने लाए हैं।

*एक जापानी महिला और उनके जर्मन पति ने कहा कि इस कार्यक्रम में शामिल होकर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। हम समझ रहे थे कि एक छोटा सा कार्यक्रम होगा। यह तो बहुत बड़ा और बहुत शांतिपूर्ण कार्यक्रम था। ख़लीफा ने जो बातें कहीं वे बहुत अच्छी और स्पष्ट थीं। आजकल राजनेताओं को भी इन बातों का लाभ उठाना चाहिए। ख़लीफा की बातों में बहुत सच्चाई है। उन्होंने इस बात को भी व्यक्त किया

कि वह मस्जिद के लिए कुछ दान देना चाहते हैं।

*एक मेहमान जब आए तो उनके शांति के बारे में और महिलाओं के अधिकारों के बारे में कुछ विचार थे। उन का एक सवाल था कि ख़लीफा शांति के लिए क्या करते हैं? हुज़ूर अनवर ने अपने संबोधन में इन सब बातों का उल्लेख किया तो कहने लगे कि मेरे सभी विचार दूर हो गए और कहने लगे कि आप के ख़लीफा तो शांति के राजदूत हैं और सभी मुसलमानों को उनकी शिक्षा का पालन करना चाहिए। उन्होंने अपने दायरे में हुज़ूर अनवर के संदेश को फैलाने का भी कहा।

*एक मेहमान कहने लगे कि मैं पहली बार जमाअत के कार्यक्रम में आया हूं। मुझे लगता है कि जमाअत ने Raunheim में अपनी जगह बना ली है। अब मुझे इंतज़ार है कि जल्द आप की मस्जिद बन जाए और उसे देखूँ।

*एक सीरियन दोस्त ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि मुझे इस बात का डर था कि ग़ैर मुस्लिम दोस्त यहां आकर ख़तरा पैदा न करें। ख़लीफतुल मसीह से एक शांति और प्रेम का माहौल महसूस होती है। ख़लीफा के चेहरे पर नूर नज़र आता है। आप दूसरे मुसलमानों से बहुत बेहतर रंग में इस्लामी शिक्षाओं को अपने संबोधन में वर्णन किया है। ख़लीफा ने आज मूल इस्लामी शिक्षा प्रस्तुत की। यह अहमदियों का पहला कार्यक्रम था जिसमें शामिल हुआ हूं। अब अधिक जानकारी प्राप्त करूंगा और शायद एक दिन में ख़ुद भी बैअत करके इस जमाअत में शामिल हो जाऊँ। यहां आने से पहले मैंने सुना था कि अहमदियों का कुरआन और है लेकिन आज यह बात भी मेरे सामने ग़लत साबित हो गई है।

*लार्ड मेयर साहिब ने कहा कि वह ख़लीफा साहिब से पहली बार इतने क़रीब से मिले हैं और वे बहुत प्रभावित हुए हैं। जब उनसे पूछा गया कि उन्हें सबसे अधिक किस चीज़ ने प्रभावित किया तो उन्होंने कहा कि ख़लीफतुल मसीह के भाषण से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। आप का भाषण बिल्कुल उनकी उम्मीदों के अनुसार था। कहते हैं कि बड़ी ख़ुशी हुई कि ख़लीफतुल मसीह ने अपने पहले वक्ताओं के बिन्दुओं का चयन करके उन्हें धार्मिक नज़र से वर्णन किया। उन्होंने कहा कि ख़लीफा साहिब के भाषण में जो धार्मिक स्वतंत्रता, सहिष्णुता और मस्जिद के उद्देश्यों का उल्लेख था वह उन्हें बहुत पसंद आया। उन्होंने कहा कि उन्हें हैरानी हुई कि ख़लीफतुल मसीह उनसे कितनी इज्ज़त से पेश आए।

*एक मेहमान Michael Saulheimer साहिब ने बताया कि उन्हें इस समारोह बहुत अच्छा लगा और उनके समीप व्यवस्था भरपूर थी। खासकर मेहमानों का स्वागत बहुत अच्छा था। उन्होंने कहा कि उन्होंने बहुत सारे ईसाई समारोह में भाग लिया है लेकिन वहां पर कभी भी वह रूह नहीं पाई जो यहां आज पाई है। इस समारोह के उच्च प्रशासन का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि इतनी बड़ी भीड़ को ठंडे मौसम में गर्म भोजन प्रस्तुत करना भी एक बड़ी बात है। कहते हैं कि ख़लीफा एक शांत और ख़ुश दिल इंसान हैं और मामलों को बड़ी उत्कृष्टता से वर्णन करते हैं। कहते हैं कि जो उनकी उम्मीदें थीं कि एक आध्यात्मिक व्यक्ति होना चाहिए आप के ख़लीफा में वैसे ही हैं।

* एक मेहमान ने कहा कि वह जमाअत से पहले परिचित थे लेकिन ख़लीफतुल मसीह जो कुछ कहा है वह शांति स्थापना के लिए बहुत आवश्यक है। ख़लीफा के शब्द बेशक ग़ैर मुसलमानों के लिए भी बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।

* Stefan Hans साहिब जिनका संबंध Federal Ministry से है, ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मैंने इस समारोह में एक बहुत ही संगठित जमाअत को पाया है। मुझे यह बात अच्छी लगी कि नैतिकता की यहां केवल बात ही नहीं की गई बल्कि उन पर अनुकरण भी किया गया।

* Danial Hoppner साहिब ने कहा कि उनके लिए एक अहमदी समारोह में शामिल होने का यह पहला मौका है। इससे पहले जमाअत के विषय में उन्हें अधिक ज्ञान नहीं था, लेकिन अब बहुत प्रभावित हैं। उन्होंने कहा कि मस्जिदों का अक्सर आतंकवाद से संबंध परिभाषित किया गया है लेकिन आज पता चला है कि यह तथ्य नहीं है और वह बहुत ख़ुश हैं कि यहां एक मस्जिद बनने वाली है और यह मस्जिद शांति का घर होगी।

*एक मेहमान महिला Lange साहिबा ने कहा कि वह पहली बार जमाअत के किसी समारोह में शामिल हो रही हैं। इस समारोह का माहौल शान्ति देने वाला है। ख़लीफतुल मसीह बहुत Sovereign हैं। ख़लीफतुल मसीह ने शांति, प्रेम और सहिष्णुता के विषय में जो कुछ उल्लेख किया है उस ने उन्हें बहुत ज्यादा प्रभावित किया है।

*एक मेहमान Michael Panzner साहिब ने कहा कि यह समारोह बहुत ज़िन्दा, open, संगठित और पेशेवर था। उन्होंने कहा कि ख़लीफा साहिब बहुत अनुभव वाले महान व्यक्ति लगते हैं। महोदय ने कहा कि बहुत आसानी से कोई भी व्यक्ति अपनी आध्यात्मिकता को महसूस कर सकता है। महोदय ने कहा कि उन्हें अफसोस इस बात का है कि दुनिया की स्थिति ऐसी हो गई है कि ऐसी स्पष्ट चीजों को भी स्पष्टीकरण की ज़रूरत आ गई।

* Katharina साहिबा जो एक शिक्षक हैं कहती हैं कि यह समारोह उनके लिए बड़ा आरामदायक है और उन्हें यह बात बहुत पसंद आई कि मेहमानों को कैसे receive किया गया है। वह कहती हैं कि उन्होंने धर्म के विषय में बहुत कुछ सीखा है। ख़लीफतुल मसीह बहुत ऊंची सोच समझ वाले व्यक्ति लगते हैं। वह कहती हैं कि ख़लीफतुल मसीह ने बड़ी ज्ञान वाली बातें की हैं जिस से स्पष्ट होता है कि उनके पास शांति का क्या महत्व है। उन्होंने कहा कि अहमदिया जमाअत एक शांतिपूर्ण मुस्लिम जमाअत लगती है और यह पूरी तरह से ग़लत बात है कि इस्लाम का मतलब आतंकवाद है।

19 अप्रैल 2017 (दिन बुधवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े पांच बजे पधार कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ अपने निवास पधारे। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल विभिन्न दफ्तर के मामलों में व्यस्त रहे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल लंदन और दुनिया के विभिन्न देशों और जमाअतों से प्राप्त होने वाली डाक, ख़त और रिपोर्ट देखते रहे। जर्मनी की जमाअतों से भी दैनिक जमाअत के दोस्त पुरूष, महिलाओं की तरफ से सैकड़ों की संख्या में ख़त उर्दू, अंग्रेज़ी और जर्मन भाषा में प्राप्त होते हैं। जर्मन भाषा के ख़तों के साथ-साथ अनुवाद किए जाते हैं। ये सब ख़त भी दैनिक हुज़ूर अनवर की सेवा में प्रस्तुत होते हैं और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ इन सभी ख़तों और रिपोर्टों को देख के बाद निर्देश देते हैं और अपने मुबारक हाथ से उपदेश लिखते हैं।

फैमली मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार सुबह सवा ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ अपने दफ्तर आए और परिवारों से मुलाक़ात का कार्यक्रम शुरू हुआ। आज 50 परिवारों के 181 व्यक्तियों ने अपने प्यारे हुज़ूर से मिलने का सौभाग्य हासिल किया। ये परिवार जर्मनी की 30 विभिन्न जमाअतों और क्षेत्रों से लंबा सफर तय करके आए थे। कैसल और स्टोटगार्ट से आने वाले 200 कि.मी से अधिक और हमबरग से आने वाले 500 सौ किलोमीटर से अधिक का लम्बा सफर तय करके आए थे। इन सभी परिवारों ने अपने प्यारे हुज़ूर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मुहब्बत से शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान किए। मुलाक़ातों का यह कार्यक्रम एक बजकर चालीस मिनट तक जारी रहा। इस के बाद दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ तशरीफ लाकर नमाज़ ज़ोहर असर जमा करके पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ अपनी निवास पर तशरीफ़ ले गए।

जमाअत अहमदिया मारबर्ग में मस्जिद के शिलान्यास समारोह

आज जमाअत मारबर्ग में मस्जिद के शिलान्यास के समारोह का कार्यक्रम था। पांच बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने आवास से बाहर आए और शहर मारबर्ग लिए प्रस्थान किया। बैयतुस्सबूह फ्रैनकफोर्ट से मारबर्ग शहर की दूरी 80 किलोमीटर है। शहर की सीमा में प्रवेश करने से पहले पुलिस की एक गाड़ी ने काफिला को स्कार्ट किया। 5 बजकर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ यहाँ तशरीफ़ लाए। आज का दिन मारबर्ग के जमाअत के दोस्तों के लिए असामान्य बरकतों और नेअमतों वाला दिन था। हर कोई ख़ुशी और प्रसन्नता से परिपूर्ण था। उनके शहर में पहली बार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के मुबारक कदम पड़ रहे थे और उनके शहर की भूमि भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ के मुबारक अस्तित्व से लाभान्वित होने वाली थी। हर आदमी और औरत, युवा बूढ़ा, छोटा बड़ा प्यारे आक़ा के आने का इंतज़ार कर रहा था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल अज़ीज़ के आगमन पर जमाअत के दोस्त ने बहुत भावुक अंदाज़ में अपने प्यारे हुज़ूर का स्वागत किया। प्रत्येक अपने हाथ हिलाते हुए अपने प्यारे हुज़ूर का स्वागत कर रहा था। बच्चे और बच्चियां स्वागत गीत और दुआ नज़में पेश कर रही थीं। महिलाऐं दर्शन से लाभान्वित हो रही थीं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल

अज़ीज़ ने अपना हाथ बुलंद करके सबको अस्सलामो अलैकुम कहा।

इस अवसर पर सदर जमाअत मारबर्ग मुहम्मद इलियास साहिब, क्षेत्रीय अमीर मुज़फ़्फ़र अहमद बाजवा साहिब, क्षेत्रीय मुअल्लिम मकसूद अल्वी साहिब ने हुज़ूर अनवर का स्वागत कहते हुए मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। इस अवसर पर लॉर्ड मेयर डॉक्टर थॉमस सपाईस और सदस्य नेशनल असेंबली स्वर्ण बालटोल साहिब ने भी हुज़ूर अनवर का स्वागत किया और मिलने का सौभाग्य प्राप्त किया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरेहिल मार्की में पधारे जहां मस्जिद के शिलान्यास के संदर्भ से समारोह का आरम्भ कुरआन की तिलावत से हुआ जो माहिद इलियास साहिब ने और इसका जर्मन भाषा में अनुवाद कामरान ख़ान ने पेश किया।

अब्दुल्लाह वागस हाऊज़र साहिब का सम्बोधन

इस के बाद आदरणीय अब्दुल्लाह वागस हाऊज़र साहिब अमीर जमाअत जर्मनी ने अपना परिचय लैक्चर प्रस्तुत किया और मारबर्ग शहर का संक्षिप्त इतिहास बताते हुए कहा कि मारबर्ग शहर कैसल और फ्रैनकफोर्ट के बीच स्थित है और प्रांत हैसन के बीच में स्थित है। इस शहर का इतिहास बहुत पुराना है। इस शहर की शुरुआत 1130 ई में हुई। लेकिन नियमित आबादी 1222 ई में हुई। इस समय शहर की आबादी 74 हज़ार पर आधारित है। यह शहर अपने मारबर्ग विश्वविद्यालय के लिए जाना है। यह विश्वविद्यालय 1527 में स्थापित किया गया था। यह दुनिया का सबसे प्राचीन प्रोटेस्टेंट विश्वविद्यालय है। इस शहर में जमाअत अहमदिया की शुरुआत 1974 में हुई। वर्ष 2010 में जमाअत ने एक नमाज़ केंद्र स्थापित किया। यहां जमाअत बहुत सक्रिय है और कई काम आयोजित करवाती है जिन्हें में पहली जनवरी का वकारे अमल, चैलेटी वाक, वृक्षारोपण और ओल्ड हाउस जाना आदि है। यहाँ निर्माण होने वाली मस्जिद के विषय में अमीर साहिब ने बताया कि नमाज़ पढ़ने के लिए दो हॉल होंगे और साथ एक घर भी निर्माण होगा इस के लिए एक केंद्रीय रसोई और पुस्तकालय भी होगी। इस मस्जिद का एक गुंबद और मीनारा भी बनाया जाएगा।

शहर मारबर्ग के लार्डमेयर का सम्बोधन

अमीर साहिब जर्मनी के आरंम्भिक सम्बोधन के बाद शहर मारबर्ग के लार्डमेयर श्री थोमास सपाईस ने अपना लैक्चर प्रस्तुत करते हुए कहा माननीय ख़लीफतुल मसीह ! सबसे पहले आप को स्वागत कहता हूँ और मुझे इस बात पर ख़ुशी है कि ख़लीफतुल मसीह मारबर्ग तशरीफ़ लाए और ख़लीफतुल मसीह का यहाँ आना हमारे लिए एक सम्मान की बात है। मेयर साहिब ने कहा हमारे इस शहर की परंपरा है कि धार्मिक चर्चा की जाए क्योंकि इस शहर में विश्वविद्यालय पाया जाता है। धर्म की एक महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि एक समय में ईसाई भरपूर इस शहर में आते रहते थे। मेयर ने कहा कि वह इस बात पर बहुत आभारी हैं कि इस शहर को मस्जिद बनाने के लिए चुना क्योंकि जो ख़ुदा का घर होता है वह शांति और प्रेम का एक निशान है। इस घर में आदमी को धर्म को समझने की शिक्षा दी जाती है। प्रत्येक अपने तौर-तरीके के अनुसार शांति प्राप्त करता है उसी के अनुसार हम सब यहाँ रहते हैं और इसी को लेकर आगे चलते हैं। मेयर साहिब ने कहा इस मस्जिद की स्थापना हेतु यह है कि यह निवास शांति का घर बने। आप अहमदी लोग अब यहां स्थायी रूप से बसे हुए हैं। हमें इस बात से बहुत ख़ुशी है कि आप जहां अपनी मस्जिद निर्माण कर रहे हैं वहाँ इस शहर में बड़ा शांतिपूर्ण जीवन बिता रहे हैं। आप हमारे समाज के अंदर अवशोषित हो चुके हैं। मस्जिद निर्माण के संदर्भ में हमारे संबंध में हमारी इच्छा है कि इस के निर्माण के सभी चरण सफलता से तय हों और हर दुर्घटना से सुरक्षित रहें और यह मस्जिद हमेशा के लिए शांति का स्थान साबित हो।

प्रांतीय सांसद महोदया कर्स्टन का सम्बोधन

मेयर के सम्बोधन के बाद प्रांतीय सांसद और आयुक्त महोदया कर्स्टन फरंडट ने अपना लैक्चर प्रस्तुत करते हुए कहा माननीय ख़लीफतुल मसीह ! मैं आप सभी का यहाँ धन्यवाद करती हूँ कि आप ने मुझे यहाँ आमंत्रित किया। आज का दिन सभी के लिए एक विशेष दिन है क्योंकि यहाँ ख़ुदा तआला के एक घर का निर्माण हो रहा है। जब मस्जिद निर्माण का काम शुरू हुआ तो उस समय कुछ ऐसे लोग भी दिखे जो इस्लाम की वास्तविकता से परिचित नहीं थे। इस पर अब अधिक काम करना है कि लोग समझें कि इसमें कोई खतरा नहीं। हमेशा आपस में बातचीत में रहना चाहिए ताकि एक दूसरे को अच्छी तरह जानें। हर व्यक्ति को एक दूसरे के साथ सहिष्णुता के साथ पेश आना चाहिए। यहां विभिन्न संस्कृति और देशों के लोग रहते हैं और एक जगह पर इकट्ठे भी होते हैं। यह भी आवश्यक है कि विभिन्न देशों और संस्कृति के लोग आपस में मिलजुल कर शांति और प्यार से रहें। अंत में महोदया ने कहा कि बड़ी ख़ुशी की बात है कि यहाँ ख़ुदा तआला का घर निर्माण हो रहा है।

सदस्य राष्ट्रीय संसद श्री स्वर्ण बार्टोल का सम्बोधन

इस के बाद सदस्य राष्ट्रीय संसद श्री स्वर्ण बार्टोल जो नेशनल असेंबली में विभिन्न कमेटीयों के अध्यक्ष भी रहे हैं, ने अपना लैक्चर प्रस्तुत करते हुए कहा माननीय ख़लीफतुल मसीह ! मेरे लिए यह बहुत ख़ुशी की बात है कि मैं आज यहाँ मौजूद हूँ। आप लोग इस जगह अब स्थायी रूप से रहना चाहते हैं इसीलिए अपनी मस्जिद निर्माण कर रहे हैं। जमाअत अहमदिया के लोग हमारे शहर के लाभदायक नागरिक हैं। आप चरमपंथ के ख़िलाफ अपनी आवाज उठाते हैं। शहर के विभिन्न कार्यों में भाग लेते ही हैं। यह बात एक समाज के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है कि मिलजुल कर रहा जाए ताकि ग़लत फहमी का निवारण हो। महोदय ने कहा कि यह मस्जिद प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक खुली इबादतगाह होगी और उम्मीद करता हूं कि इधर से शांति ही फैलेगी। मैं उम्मीद करता हूं कि इस मस्जिद का निर्माण जल्द होगा ताकि हम सब इसके उद्घाटन भी शामिल हों।

ख़िताब

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़

इसके बाद कार्यक्रम के अनुसार 6 बजकर 20 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने अपना ख़िताब फरमाया। हुज़ूर अनवर ने तशह्हुद, तऊज़ और तसमिया के बाद फरमाया: सब से पहले तो सबसे सम्मानित मेहमानों को अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहो कहता हूँ। सुरक्षा, शांति, प्यार और मुहब्बतका उपहार देता हूँ। इस समय मैं देख रहा हूं कि स्थानीय लोग काफी बड़ी संख्या में हमारी मजलिस में आए हुए हैं और आप लोगों का यहाँ आना बेशक इस बात का सबूत है कि आप लोग बड़े खुले दिल के हैं और ऐसे खुले दिल के लोगों के लिए जिस सीमा तक प्रेम और सुरक्षा और प्यार का उपहार दिया जाए वह कम है। यही तथ्य है कि यदि हम उदार हों, एक दूसरे को समझने वाले हैं, एक दूसरे की राय को सुनने वाले हों तब ही समाज में शांति और सुरक्षा भी पैदा होती है।

अत: इस बात पर सब से पहले जहां मैंने आप को सुरक्षा का उपहार दिया आप को बधाई भी देता हूँ कि आप लोगों में यह गुण है कि आप दूसरे की बात सुनना भी चाहते हैं और यही सच है और यही कारण है कि आप लोग इस समय यहां मौजूद भी हैं और यहां मौजूद होना इस बात का भी सबूत है कि आप चाहते हैं कि इस्लाम के विषय में कुछ सुनें और कुछ समझें क्योंकि यह विशेष रूप से एक ऐसा समारोह है जो एक मुस्लिम जमाअत का एक रूप में धार्मिक समारोह इसलिए है कि अपनी इबादत करने के स्थान की नींव रख रहे हैं और इसमें आप लोगों का आना किसी सांसारिक उद्देश्य के लिए नहीं हो सकता। बेशक आप लोगों के मन में ये विचार होगें कि हम यहाँ जाएँ, हम बड़े समय से परिचित भी हैं उन लोगों से संबंध भी हैं, जानते भी हैं, जमाअत की यहाँ कार्यविधियां भी हैं, तो हमने देखा और समझा। लेकिन मस्जिद के आधार के समारोह को जाकर देखना चाहिए कि वहाँ कैसे ये लोग अपने कार्य करते हैं और क्या बातें होती हैं। तो इस लिहाज से आप लोग वास्तव में सराहनीय हैं।

दूसरे यहाँ अहमदियों से जो यहाँ पर रहते हैं उनसे भी मैं इस लिहाज से ख़ुश हूँ कि उन्होंने यहाँ आकर स्थानीय लोगों से संबंध बढ़ाए और अहमदियों से संबंधों के कारण ही है, अहमदियों का आप लोगों में लोगों घुल मिल जाना यह भी एक कारण है जिसकी वजह से आप लोग उनके निमंत्रण पर यहाँ आए और हमारे इस समारोह को रौनक प्रदान की।

जहां तक जमाअत अहमदिया मुस्लिमा का संबंध है हम जहां भी जाते हैं प्यार, शांति और सुरक्षा का संदेश देते हैं और यह इस्लाम की शिक्षा है। अमीर साहिब ने उल्लेख किया कि यहां हम समाज सेवा के काम ओल्ड एज हाउस में या अन्य विभिन्न प्रकार की चीरेटीज़ में करते हैं। मानवीयता के काम तो एक मनुष्य का कर्तव्य है। एक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि अपने दूसरे भाई के काम आए। भले ही कि उसका धर्म क्या है। बतौर इंसान हमें एक दूसरे को समझना चाहिए। हमें एक दूसरे के काम आना चाहिए और एक दूसरे की ज़रूरतों को पूरा करना चाहिए और यह बहुत ज़रूरी बात है। अगर यह नहीं तो इबादत का भी कोई लाभ नहीं। इसीलिए कुरआन में अल्लाह तआला ने बड़ा स्पष्ट फरमाया है कि ऐसे लोग जो केवल मस्जिदों में आते हैं या नमाज़ें पढ़ते हैं और फिर नमाज़ें पढ़ कर दूसरों को दु:ख देते हैं, उनके काम नहीं आते, अनाथों की ख़बर नहीं लेते, बुजुर्गों की सेवा नहीं करते, ग़रीबों की मदद नहीं करते या और विभिन्न प्रकार के समाज सेवा के काम नहीं करते, शांति और मुहब्बत और प्यार तथा सुरक्षा को नहीं फैलाते तो

उनकी नमाज़ें स्वीकार नहीं होतीं बल्कि वह उनके लिए गुनाह बन जाती हैं। अत: कुरआन इस सीमा तक जाकर हमें यह आदेश देता है कि तुम ने समाज सेवा के काम करने हैं और यही कारण है कि हम अहमदिया मुस्लिम जमाअत जो वास्तविक इस्लामी शिक्षा का पालन करने वाली है वह समाज सेवा के कार्यों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेती है।

लॉर्ड मेयर ने यहां अपने भाषण में विश्वविद्यालय का उल्लेख किया। जहाँ तक शिक्षा का सवाल है जमाअत अहमदिया शिक्षा फैलाने में भी दुनिया में ग़रीब देशों में बड़ी भूमिका निभाने की कोशिश कर रही है। इससे पहले कि वे बातें बताऊँ जिस तरह जमाअत अहमदिया शिक्षा फैला रही है महिलाओं के संदर्भ में एक दिलचस्प विश्लेषण यह भी बता दूं क्योंकि यहाँ मैं देख रहा हूँ कि औरतें भी पर्याप्त संख्या में बैठी हुई हैं कि जमाअत अहमदिया में पुरुषों की तुलना में महिलाएं अधिक शिक्षा प्राप्त हैं और विश्वविद्यालय भी शिक्षा प्राप्त करने वाली हैं। विभिन्न व्यवसायों में पेशेवर शिक्षा भी प्राप्त करने वाली हैं और यह इसलिए है कि एक औरत जब शिक्षा प्राप्त करती है तो उसकी शिक्षा केवल अपनी ज़ात तक सीमित नहीं रही। बेशक हर आदमी और औरत जब शिक्षा प्राप्त करते हैं इस शिक्षा को फैलाते हैं। इस शिक्षा को प्राप्त करके वह किसी न किसी रंग में देश और राष्ट्र की सेवा कर रहे हैं। लेकिन एक महिला के शिक्षा प्राप्त करने के बाद पुरुष की यह प्राथमिकता है कि वे अपने बच्चों को पालने वाली भी है और इसीलिए इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जन्नत महिला के पैरों के नीचे है। जन्नत औरत के पैर के नीचे इसलिए है कि एक महिला अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देकर, शिक्षा प्राप्त करने के बाद आगे अपने बच्चों को अच्छा प्रशिक्षण करती है तो उन्हें अच्छा नागरिक बनाती है। उन्हें देश व राष्ट्र की एक संपत्ति बनाती है और इस तरह वह अपने बच्चों को जन्नत में ले जाने वाली बनाती है और जन्नत की कल्पना जो इस्लाम में है वह यह है कि जन्नत दो तरह की है। इस दुनिया में भी जन्नत है और एक मरने के बाद जन्नत है और दुनिया की जन्नत यहीं शुरू हो जाती है जब एक कर्म करने वाला व्यक्ति बनता है, उच्च नैतिकता वाला इंसान बनता है, जहां वह अल्लाह तआला की इबादत करने वाला बनता है वहाँ वह अपने दूसरे भाइयों से, इंसानों से प्यार और स्नेह करने वाला होता है और शांति और सुरक्षा और आराम फैलाने वाला होता है। बेशक वह व्यक्ति जो शांति और सुरक्षा और आराम फैलाने वाला हो वह जहां ख़ुद अपने आप को सुरक्षित कर लेता है मानों कि जन्नत में है। वह दूसरों के लिए भी इस दुनिया में भी जन्नत का माध्यम बन जाता है।

एक तरफ हम देखते हैं आतंकवादी हैं, आतंकवाद कर रहे हैं। निर्दोष लोगों को क्लब में जाके फायरिंग करके हत्या कर दी या सुसाइड बाम्बिंग करके हत्या कर दी या किसी और जगह उपद्रव पैदा कर दिया या मुसलमान देशों में भी हम देखते हैं कि अपने देशों में ही मुसलमान मुसलमानों की हत्या कर रहे हैं। पश्चिमी देशों में हत्या कर रहे हैं। लोग इस दुनिया को जो अल्लाह तआला ने जन्नत बनाई थी उसे भी नरक बनाने वाले हैं और इस लिहाज़ से वह कभी सराहनीय नहीं हो सकते। दूसरी तरफ अच्छे मुसलमान हैं, अच्छे इंसान हैं चाहे वे ईसाई हैं या वह यहूदी हैं या किसी भी धर्म के हैं जो अपने परिवेश में शांति और सुरक्षा और प्यार और स्नेह फैलाते हैं मानो कि उन्होंने इस दुनिया को जन्नत बना दिया और जो लोग मानव सेवा करते हैं, इस दुनिया को जन्नत बनाते हैं, उनके विषय में जैसा कि मैंने उल्लेख किया अल्लाह तआला कहता है उनकी फिर इबादतें भी स्वीकार करता हूँ और यह इबादतें ही हैं जो फिर अगले संसार में मनुष्य को जन्नत का वारिस बनाती हैं और उल्लेख हो चुका है यह इबादतों के बिना मानव सेवा नहीं कर सकता।

वह इबादतें व्यर्थ हैं जिस में दूसरे व्यक्ति के लिए दिल में सहानुभूति और दर्द और प्यार न हो। अत: इस दुनिया की जन्नत बसाने वाले वास्तविक वही लोग हैं जो शांतिप्रिय और स्नेह और प्यार फैल रहे हैं और अगले जहान की जन्नत में जाने वाले भी वही लोग हैं जो यह स्नेह और प्यार फैलाते हैं।

जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने कहा कि मैं दो बड़े लक्ष्यों को लेकर आया हूँ। एक यह कि इंसान अपने ख़ुदा को पहचाने और उस की इबादत करे और उसका हक़ अदा करे। दूसरे यह कि इंसान दूसरे इंसान की गरिमा और सम्मान करे और उसका हक़ अदा करे।

एक बार मुझे किसी ने पूछा कि शांति और सुरक्षा दुनिया में कैसे स्थापित हो सकती है। मैंने कहा कि अगर वास्तविक शांति और सुरक्षा कायम करनी है तो इसके लिए आवश्यक है कि बजाय अपने अधिकार लेने की मांग करने के दूसरों के अधिकार देने की कोशिश करो। जब हम दूसरों के अधिकार देने की कोशिश करेंगे तो तब ही हम वास्तविक स्नेह और प्यार फैला सकते हैं। तो यह कल्पना जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के विषय में भी और मानवता की सेवा के विषय में भी।

यहां की सांसद साहिबा आई थीं। उन्होंने भी सहिष्णुता का उल्लेख किया। बेशक सहिष्णुता एक बड़ी महत्वपूर्ण बात है और पहले भी उल्लेख कर चुका हूँ कि सहिष्णुता ही है जिस से हम एक दूसरे का ख्याल रख सकते हैं और आपस में मिलजुल कर रह सकते हैं। दुनिया में विभिन्न धर्म हैं। मुसलमान हैं। ईसाई हैं। यहूदी हैं। हम वास्तविक मुसलमानों का यह विश्वास है कि सभी धर्म अल्लाह तआला की तरफ से आए और हम यह मानते हैं कि हर धर्म के संस्थापक और नबी सच्चे थे। हम हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक आने वाले सभी नबियों और धर्मों के संस्थापकों में विश्वास करते हैं और ईमान लाते हैं और यही इस्लाम की वास्तविक शिक्षा है और यही वह शिक्षा है जो सहिष्णुता बढ़ाती है। कोई वास्तविक मुसलमान नहीं कह सकता कि मैं अमुक धर्म के मानने वाले को नहीं मानता या उसका संस्थापक झूठा है या उसके ख़िलाफ ग़लत बात करूँ। अल्लाह तआला कुरआन में तो यहां तक फरमाया है कि तुम मूर्तियों की इबादत करने वालों के बुतों को भी बुरा मत कहो क्योंकि इसके जवाब में वह तुम्हारे ख़ुदा को बुरा कह सकते हैं और जब बुरा कहेंगे तो तुम्हारे अंदर रंजिशें पैदा होंगी। जब दिल में रंजिशें पैदा हों फिर दंगा पैदा होता है। आपस में एक दूसरे के ख़िलाफ कार्रवाई करने की कोशिश की जाती है। नुकसान पहुंचाने की कोशिश की जाती है और इस तरह के बजाय प्यार,नफरतें पैदा होती हैं। इसलिए एक वास्तविक मुसलमान का काम है कि जहां वह हर धर्म वाले का सम्मान करे और उनके सभी नबियों पर विश्वास रखे और वहाँ यह बात भी याद रखें कि किसी के बुतों को भी बुरा मत कहो जो ख़ुदा के साझी ठहराए जाते हैं क्योंकि इससे भी दंगा पैदा होता है। अत: ये हैं वे गुणवत्ता प्यार मुहब्बत और शांति और सुरक्षा के प्रसार की जो इस्लाम ने हमें सिखाई हैं। परंपराएं अलग हो सकती हैं, धर्म अलग हो सकते हैं। अल्लाह तआला कुरआन में फरमाया है कि धर्म में कोई ज़ोर नहीं है। इस के बावजूद कि हम इस बात पर विश्वास रकते हैं कि इस्लाम अंतिम धर्म है और सभी धर्मों की अच्छी बातें इस्लाम में पाई जाती हैं एक वास्तविक मुसलमान उन पर अनुकरण करता है।

अल्लाह तआला कुरआन में जिस तरह कि मैंने उल्लेख किया बड़ा स्पष्ट रूप से फरमाया है कि सभी रसूलों पर ईमान लाओ। इन बातें पर हम जब विश्वास रखते हैं और उस पर विश्वास करते हैं तो विभिन्न परंपराओं विभिन्न धर्म जो हैं वे कभी हमारे अंदर किसी प्रकार की घृणा नहीं पैदा कर सकते। लोग कहते हैं कि इस्लाम बड़ा चरमपंथी धर्म है। आतंकवाद का धर्म है। यह इस्लाम की शिक्षा की वास्तविकता नहीं है। वे लोग जो इस प्रकार के काम कर रहे हैं, वे लोग हैं जिन्होंने इस्लाम को न समझा और न कभी इस पर अनुकरण किया बल्कि पिछले साल की बात है एक फ्रेंच जर्नलिस्ट आइ,एस के क्षेत्र में गया उसने कुछ लोगों से पूछा वहाँ आइ,एस के सदस्यों से कि आप लोग यह जो अत्याचार और दुर्व्यवहार कर रहे हो क्या यह कुरआन की शिक्षा है? तो उनमें से बहुतों ने कहा न हम ने कुरआन पढ़ा है न हमें इसका पता है कि क्या शिक्षा है। हमें तो यह पता है कि हमारे लीडर कहते हैं वह हम करना है और behead करना या मारना है या मारना या मासूमों को मारना यह कोई इस्लाम की शिक्षा नहीं बल्कि उनके अपने निजी कर्म हैं जो अपने नेताओं की वजह से करते हैं।

तो यह हो नहीं सकता कि इस्लाम इस तरह की शिक्षा दे। जब लंबी परसीक्योशन के बाद इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मक्का से हिजरत करके मदीना आना पड़ा और सच्चा इतिहास यही कहता है वहाँ काफिरों ने आप पर हमला किया तो उस समय अल्लाह तआला ने जो युद्ध की अनुमति दी थी वह भी कुरआन में बड़े स्पष्ट शब्दों में दर्ज है और वह यह है कि अगर इन अत्याचारियों के हाथों को न रोका गया तो ये लोग धर्म के दुश्मन हैं। कुरआन में यह आयत दर्ज है कि फिर अगर उनके हाथ न रोका गया तो न कोई चर्च बाकी रहेगा न कोई सेनागाग बाकी रहेगा न कोई मंदिर बाकी रहेगा न कोई मस्जिद बाकी रहेगी, जहां ख़ुदा का नाम लिया जाता है, जहां लोग इबादत के लिए इकट्ठे होते हैं। तो यह है वह कल्पना जो इस्लाम की वास्तविक अवधारणा है। दूसरे धर्मों के साथ सहिष्णुता और मिलजुल के रहने की और यही कारण है कि जहां भी हमारे मस्जिदें हैं हम अल्लाह तआला की कृपा से वहाँ पहले से बढ़कर सही इस्लामी शिक्षा को फैलाने वाले बनते हैं बल्कि अक्सर कहा करता हूँ कि हमारा कर्तव्य है कि कुरआन की यह आयत जो हमें बताती है कि धर्म के दुश्मन जो हैं वह धर्म को नष्ट करना चाहते हैं और इस वजह से अगर उनके हाथ न रोके तो यह हर धर्म को नष्ट कर देंगे। यह आयत हमें इस बात की ओर भी ध्यान दिलाती है कि हर अहमदी जहां अपनी मस्जिद की रक्षा करने वाला हो वहाँ वह चर्च की रक्षा करने वाला भी हो। वहाँ वह

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/2017-2019 Vol. 2 Thursday 14 September 2017 Issue No. 37

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

सेनागाग की सुरक्षा करने वाला भी हो और वहाँ वे दूसरे धर्मों के इबादत स्थलों की रक्षा करने वाला भी हो। तो यह वह आदरणीय शिक्षा है और यह सिद्धांत है जिसके आधीन हम मस्जिदें बनाते हैं क्योंकि मस्जिद बनाने के बाद हमारा जिस तरह से यह कर्तव्य बन जाता है कि हम अपनी मस्जिद की रक्षा उसकी सफाई का ख्याल रखें, उसके परिवेश को शुद्ध रखें इसी तरह हमारा भी कर्तव्य है कि हम अपने परिवेश में अगर दूसरे धर्मों के इबादत स्थल हैं उनकी भी रक्षा और उनके माहौल को भी स्वच्छ रखने के लिए भी प्रयास करें।

नेशनल असेंबली के सदस्य साहिब ने अपना विचार व्यक्त किया इस विषय में भी यह कहना चाहता हूं कि यह बड़ी अच्छी बात है कि सभी वक्ताओं की यह अभिव्यक्ति कि अहमदी इस समाज का एक ऐसा हिस्सा बन चुके हैं जो एक तरह इस देश का मजबूत हिस्सा हैं। एंटी ग्रेट हो चुके हैं। इसमें एकीकृत हो चुके हैं। तो यह एक सुविधा है जो एक अहमदी की होनी चाहिए। अगर यह नहीं तो इसका मतलब है कि वह अहमदी इस्लाम की सही शिक्षा का पालन नहीं कर रहा। जर्मन नागरिकता मिलने के बाद चाहे पाकिस्तान से आया हुआ एक अहमदी है, या अफ्रीका से आया हुआ एक अहमदी या किसी और देश से आया हुआ एक अहमदी है अगर वे जर्मन नागरिक है तो उसका कर्तव्य बनता है कि वह अपने देश से वफादार बन जाए। पुरानी नागरिकता उसकी समाप्त हो गई। अब वह जर्मन नागरिक है और यहाँ रहने वाले पाकिस्तानी अहमदी जो पाकिस्तान से हिजरत करके आए अब वे जर्मन नागरिक हैं। यह उनका कर्तव्य इसलिए बनता है कि इस्लाम के संस्थापक ने कहा कि देश से प्रेम तुम्हारे ईमान का हिस्सा है। अत: हमारे ईमान की भी यह मांग है कि जिस जिस देश में जहां अहमदी रहता है वहाँ उस से प्यार करे और उसके सुधार के लिए काम करे और वहाँ के लोगों में प्रेम और शांति और प्यार का संदेश पहुंचाए और फैलाए। तो ये बातें ऐसी हैं जिन पर अगर अनुकरण किया जाए तो यह हो ही नहीं सकता कि किसी को इस्लाम की शिक्षा के विषय में शंकाए हों और हम अहमदी यह कोशिश करते हैं कि शिक्षा पर जहां अधिकतम पालन करें वहाँ दुनिया को भी बताएँ यह वह शिक्षा है जो वास्तविक शिक्षा है और हमारे प्यार प्रेम सहिष्णुता के अतिरिक्त कोई और बात दूसरों को नहीं मिलेगी या हमारे अंदर इन बातों के अतिरिक्त कोई और चीज़ नज़र नहीं आएगी और मस्जिद बनने के बाद इंशा अल्लाह आप देखेंगे कि यहां के रहने वाले अहमदी पहले से बढ़कर यहाँ के लोगों का अधिकार अदा वाले होंगे क्योंकि यह भी इस्लाम धर्म के संस्थापक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया और पवित्र कुरआन में भी इस बात का उल्लेख है कि तुम्हारे पड़ोसियों के अधिकार हैं और तुम्हारे पड़ोसी तुम्हारे घरों के पड़ोसी हैं। तुम्हारे साथ काम करने वाले लोग तुम्हारे पड़ोसी हैं। तुम्हारे साथ सफर करने वाले लोग भी तुम्हारे पड़ोसी हैं। दैनिक लोग अपने कामों में जाते हैं मीलों सफर करते हैं बसों और ट्रेनों पर मानो कि वह सभी पड़ोसी बन गए और चाहे उसे पहचानते हों या नहीं पहचानते हैं वे सब तुम्हारे पड़ोसी हैं। इस्लाम धर्म के संस्थापक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस तीव्रता से अल्लाह तआला ने मुझे पड़ोसियों के हक़ अदा करने की ओर ध्यान दिलाया कि मुझे विचार हुआ कि शायद यह विरासत में भी हकदार हों। यह महत्व है इस्लाम में पड़ोसी का और पड़ोसी का अधिकार देना हमारा एक कर्तव्य बनता है और कर्तव्य हम ने देना है और उम्मीद करते हैं इंशा अल्लाह जब मस्जिद बन जाएगी तो हमारी इस मस्जिद के पड़ोसी भी और यहां आने वाले सभी लोग जो यहाँ इबादत के लिए आते हैं उनके पड़ोसी हमारे पहले से बढ़कर शांति, सुरक्षा स्नेह और प्यार प्राप्त करने वाले होंगे और इंशा अल्लाह हम हर मामले में न केवल प्यार मुहब्बत मुंह से कहने वाले और फैलाने वाले होंगे बल्कि व्यावहारिक रूप में अपने साथ इसे फैलाने में भूमिका निभानी होगी अन्यथा न किसी धर्म का लाभ न किसी शिक्षा का लाभ है। विश्वविद्यालय में पढ़ कर अगर हम आतंकवाद करना है तो वह शिक्षा व्यर्थ है। अगर किसी धर्म में शामिल होकर चरमपंथ दिखाना है तो धर्म व्यर्थ है। मूल धर्म वही है जो प्यार और मुहब्बत फैलाए और यही इस्लाम की शिक्षा है। मुझे उम्मीद है कि इंशा अल्लाह मस्जिद बनने के बाद आप लोग पहले से बढ़कर अहमदियों से प्यार मुहब्बत, सहानुभूति और भाईचारा के नारे सुनेंगे। इंशा अल्लाह। धन्यवाद। (**शेष**.....)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

36. छत्तीसवां निशान - यह है कि बशीर अहमद के पश्चात् ख़ुदा ने मुझे एक और लड़का पैदा होने की शुभ सूचना दी। अत: वह शुभ सूचना भी विज्ञापन द्वारा लोगों में प्रकाशित की गई। तत्पश्चात् तीसरा लड़का पैदा हुआ और उसका नाम शरीफ़ अहमद रखा गया।

37. सैंतीसवां निशान - यह है कि इसके पश्चात् ख़ुदा तआला ने गर्भ के दिनों में एक लड़की की शुभ सूचना दी तथा उसके बारे में कहा - تُنَشَّأُ فِي الحِلية। अर्थात् आभूषण में पालन पोषण होगा। अर्थात् न छोटी आयु में मृत्यु होगी और न दरिद्रता देखेगी। अत: इसके पश्चात् लड़की पैदा हुई जिसका नाम मुबारका बेगम रखा गया तथा उसके जन्म से सात दिन गुज़रे तो अक़ीक़े के दिन यह सूचना आई कि पंडित लेखराम भविष्यवाणी के अनुसार किसी के हाथ से मारा गया। तब एक ही समय में दो निशान पूरे हुए।

38. अड़तीसवां निशान - यह है कि लड़की के पश्चात् मुझे एक और बेटे की शुभ सूचना दी गई। अत: वह शुभसूचना पुरानी कार्य-शैली के अनुसार प्रकाशित की गई और फिर लड़का पैदा हुआ उसका नाम मुबारक अहमद रखा गया।

39. उन्तालीसवां निशान - यह है कि मुझे ख़ुदा की वह्यी के द्वारा बताया गया कि एक और लड़की पैदा होगी परन्तु उसकी मृत्यु हो जाएगी। अत: वह इल्हाम समय से पूर्व बहुत से लोगों को बताया गया। तत्पश्चात् वह लड़की पैदा हुई और कुछ माह पश्चात् उसका निधन हो गया।

40. चालीसवां निशान - यह है कि उस लड़की के पश्चात् एक और लड़की की शुभ सूचना दी गई जिसके शब्द ये थे कि - دُخت کرام अत: वह इल्हाम 'अलहकम' और 'अलबदर' अख़बारों में और कदाचित इन दोनों में से किसी एक में प्रकाशित किया गया। तत्पश्चात् लड़की पैदा हुई जिसका नाम **अमतुल हफ़ीज़** रखा गया और वह अब तक जीवित है।

(हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ 115 -118, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22, पृष्ठ 226-228)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad